JITENDER SINGH

PRIYANKA

Model: Web-MatchAnalysisDetailed

Order No: 120760801

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
05/10/1992	जन्म तिथि	16/07/1994
सोमवार	दिन	शनिवार
घंटे 17:00:00	जन्म समय	07:00:00 घंटे
घटी 27:00:15	जन्म समय(घटी)	03:48:46 घटी
India	देश	India
Naraina	स्थान	Rajabpur
28:51:30 उत्तर	अक्षांश	28:50:12 उत्तर
78:21:37 पूर्व	रेखांश	78:22:37 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:16:34	स्थानिक संस्कार	-00:16:30 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:11:54	सूर्योदय	05:28:28
17:57:37	सूर्यास्त	19:16:12
23:45:38	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:05

कुम्भ	लग्न	कर्क
शनि	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
मकर	राशि	कन्या
शनि	राशि-स्वामी	बुध
उत्तराषाढ़ा	नक्षत्र	चित्रा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	मंगल
4	चरण	2
सुकर्मा	योग	सिद्ध
तैतिल	करण	बव
जी-जीवन	जन्म नामाक्षर	पो-पोशाली
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
वैश्य	वर्ण	वैश्य
जलचर	वश्य	मानव
नकुल	योनि	व्याघ्र
मनुष्य	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
सिंह	वर्ग	मूषक

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 0वर्ष 2मा 18दि		29:27:00	कुंभ	लग्न	कर्क	18:07:21	मंगल 3वर्ष 7मा 27दि	
राहु		18:43:03	कन्या	सूर्य	मिथु	29:31:45	गुरु	
24/12/2009		09:31:08	मक	चंद्र	कन्या	29:41:50	13/03/2016	
24/12/2027		18:30:45	मिथु	मंगल	वृष	14:44:50	13/03/2032	
राहु	05/09/2012	03:15:23	तुला	बुध	मिथु	09:18:05	गुरु	01/05/2018
गुरु	29/01/2015	05:09:37	कन्या	गुरु	तुला	11:16:23	शनि	11/11/2020
शनि	05/12/2017	18:52:02	तुला	शुक्र	सिंह	11:37:05	बुध	17/02/2023
बुध	24/06/2020	18:09:14	मक व	शनि व	कुंभ	18:11:32	केतु	24/01/2024
केतु	12/07/2021	00:53:17	धनु व	राहु	तुला	28:01:03	शुक्र	24/09/2026
शुक्र	12/07/2024	00:53:17	मिथु व	केतु	मेष	28:01:03	सूर्य	13/07/2027
सूर्य	06/06/2025	20:21:01	धनु	हर्ष व	मक	00:37:21	चन्द्र	11/11/2028
चन्द्र	06/12/2026	22:26:13	धनु	नेप व	धनु	28:08:25	मंगल	18/10/2029
मंगल	24/12/2027	27:34:31	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	01:36:34	राहु	13/03/2032

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:45:38 चित्रपक्षीय अयनांश 23:47:05

लग्न-चलित

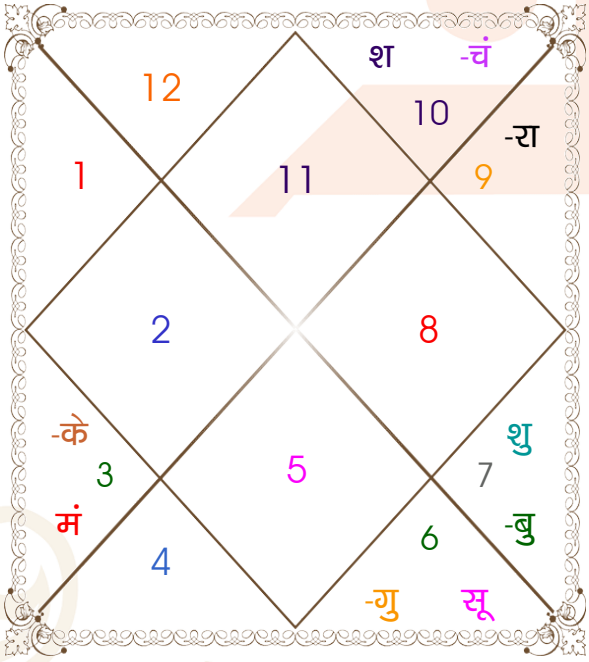

लग्न-चलित

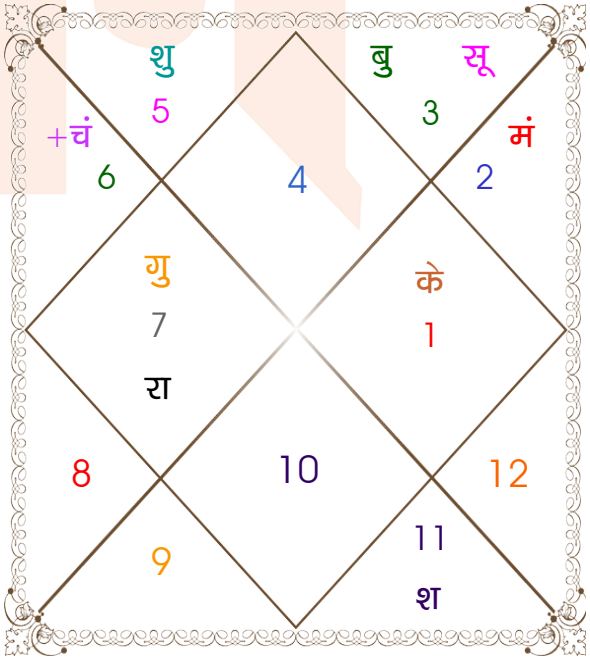

चन्द्र कुंडली

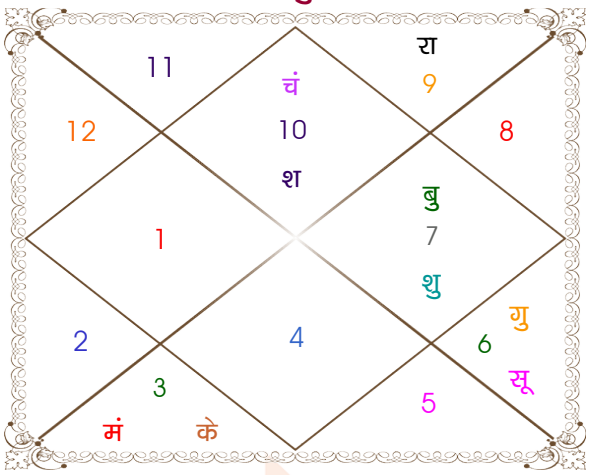

चन्द्र कुंडली

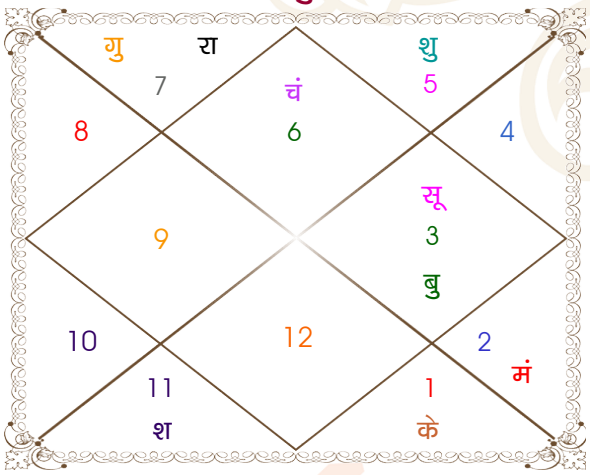

सूर्य कुंडली

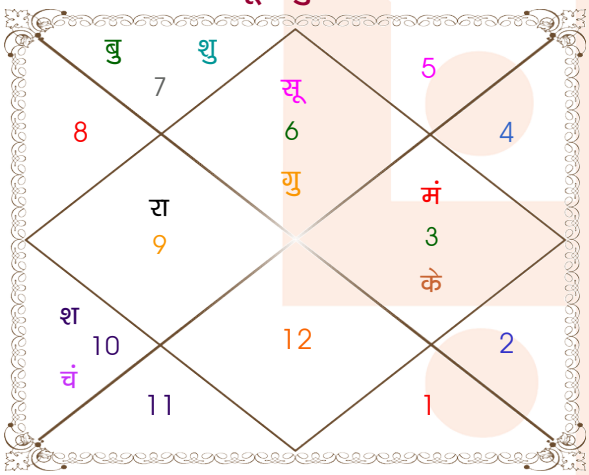

सूर्य कुंडली

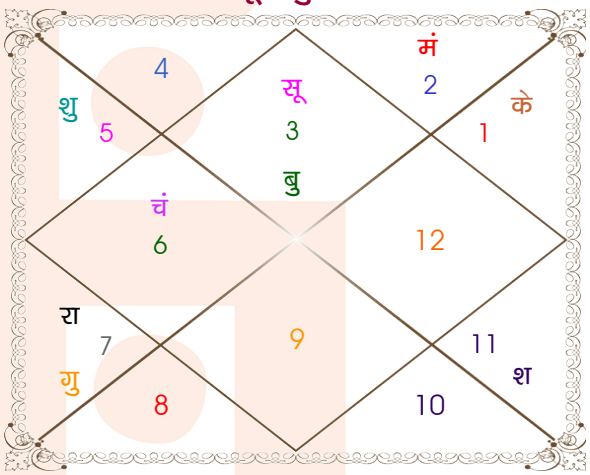

नवमांश कुंडली

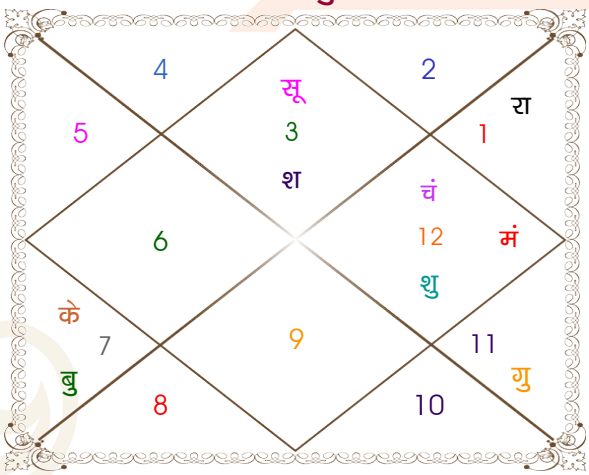

नवमांश कुंडली

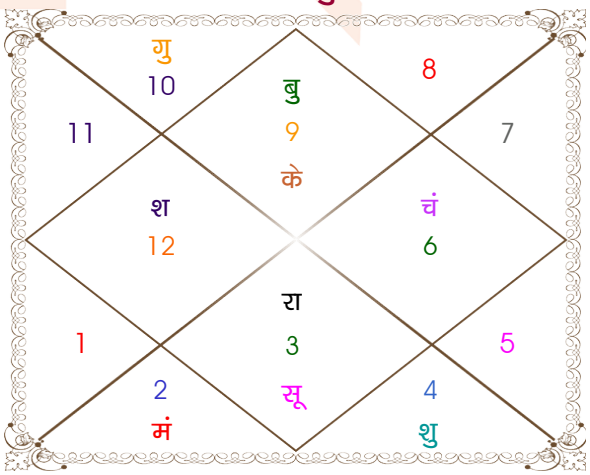

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 2 मास 0 दिन

के.पी. अयनांश : 23:39:08

फॉरच्युना : मिथुन 20:21:35

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	18:49:33	बुध	चंद्र	बुध	मंगल
चंद्र		मक	09:37:38	शनि	सूर्य	शुक्र	बुध
मंगल		मिथु	18:37:15	बुध	राहु	चंद्र	शनि
बुध		तुला	03:21:53	शुक्र	मंगल	शुक्र	मंगल
गुरु		कन्या	05:16:07	बुध	सूर्य	बुध	बुध
शुक्र		तुला	18:58:32	शुक्र	राहु	चंद्र	केतु
शनि	व	मक	18:15:44	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
राहु	व	धनु	00:59:47	गुरु	केतु	शुक्र	शुक्र
केतु	व	मिथु	00:59:47	बुध	मंगल	बुध	मंगल
हर्ष		धनु	20:27:31	गुरु	शुक्र	गुरु	शनि
नेप		धनु	22:32:43	गुरु	शुक्र	शनि	केतु
प्लूटो		तुला	27:41:01	शुक्र	गुरु	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कुंभ	29:33:30	शनि	गुरु	चंद्र	मंगल
2	मेष	08:19:18	मंगल	केतु	गुरु	बुध
3	वृष	07:40:28	शुक्र	सूर्य	केतु	बुध
4	मिथु	01:59:28	बुध	मंगल	केतु	शुक्र
5	मिथु	25:42:24	बुध	गुरु	बुध	शनि
6	कर्क	23:10:04	चंद्र	बुध	चंद्र	शुक्र
7	सिंह	29:33:30	सूर्य	सूर्य	राहु	गुरु
8	तुला	08:19:18	शुक्र	राहु	राहु	सूर्य
9	वृश्चि	07:40:28	मंगल	शनि	केतु	राहु
10	धनु	01:59:28	गुरु	केतु	शुक्र	गुरु
11	धनु	25:42:24	गुरु	शुक्र	बुध	शनि
12	मक	23:10:04	शनि	चंद्र	सूर्य	बुध

भाव कुंडली

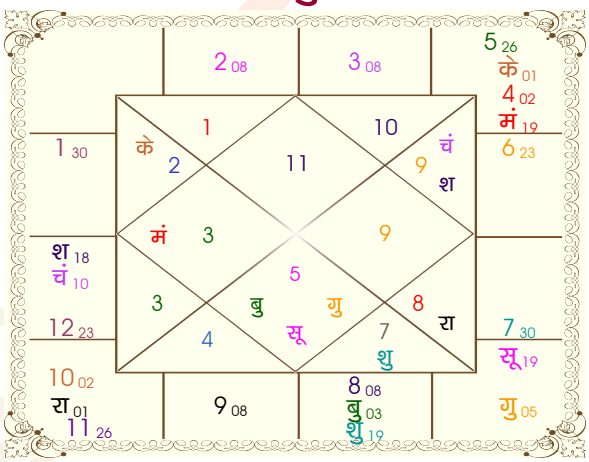

भोग्य दशा काल : मंगल 3 वर्ष 7 मास 6 दिन

के.पी. अयनांश : 23:40:37

फॉरच्युना : तुला 18:23:54

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	29:38:13	बुध	गुरु	चंद्र	राहु
चंद्र		कन्या	29:48:18	बुध	मंगल	शनि	गुरु
मंगल		वृष	14:51:18	शुक्र	चंद्र	गुरु	शुक्र
बुध		मिथु	09:24:33	बुध	राहु	गुरु	बुध
गुरु		तुला	11:22:51	शुक्र	राहु	शनि	शुक्र
शुक्र		सिंह	11:43:33	सूर्य	केतु	बुध	केतु
शनि	व	कुंभ	18:18:00	शनि	राहु	चंद्र	राहु
राहु		तुला	28:07:31	शुक्र	गुरु	शुक्र	शनि
केतु		मेष	28:07:31	मंगल	सूर्य	चंद्र	बुध
हर्ष	व	मक	00:43:49	शनि	सूर्य	राहु	शुक्र
नेप	व	धनु	28:14:53	गुरु	सूर्य	चंद्र	शुक्र
प्लूटो	व	वृश्चि	01:43:02	मंगल	गुरु	राहु	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	18:13:49	चंद्र	बुध	बुध	गुरु
2	सिंह	12:31:17	सूर्य	केतु	बुध	राहु
3	कन्या	10:54:29	बुध	चंद्र	चंद्र	शुक्र
4	तुला	13:12:15	शुक्र	राहु	बुध	शुक्र
5	वृश्चि	16:45:45	मंगल	बुध	बुध	बुध
6	धनु	18:44:13	गुरु	शुक्र	राहु	शनि
7	मक	18:13:49	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
8	कुंभ	12:31:17	शनि	राहु	शनि	गुरु
9	मीन	10:54:29	गुरु	शनि	सूर्य	शुक्र
10	मेष	13:12:15	मंगल	केतु	बुध	शनि
11	वृष	16:45:45	शुक्र	चंद्र	शनि	शुक्र
12	मिथु	18:44:13	बुध	राहु	चंद्र	शनि

भाव कुंडली

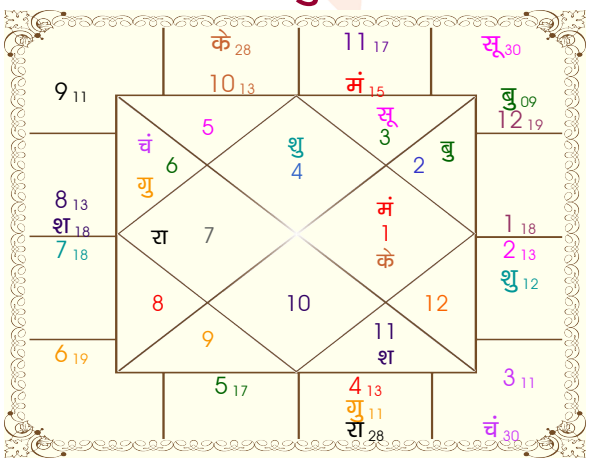

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शनि-
2	मंगल- बुध- केतु-
3	शुक्र- राहु, केतु,
4	मंगल, बुध+ केतु,
5	बुध-
6	सूर्य- चंद्र- शनि-
7	सूर्य, चंद्र+ बुध, गुरु+
8	शुक्र,
9	मंगल+ बुध- शुक्र, राहु, केतु-
10	गुरु-
11	सूर्य, चंद्र, गुरु- शनि+
12	शनि-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- मंगल- शुक्र,
2	सूर्य- केतु-
3	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध- गुरु, राहु,
4	बुध, गुरु, शुक्र- शनि, राहु,
5	चंद्र- मंगल-
6	सूर्य- गुरु- राहु-
7	शनि-
8	शनि,
9	सूर्य- गुरु- राहु-
10	चंद्र+ मंगल, शुक्र, केतु,
11	बुध, शुक्र-
12	सूर्य, बुध- केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	6- 7, 11,
चंद्र	6- 7+ 11,
मंगल	2- 4, 9+
बुध	2- 4+ 5- 7, 9-
गुरु	7+ 10- 11-
शुक्र	3- 8, 9,
शनि	1- 6- 11+ 12-
राहु	3, 9,
केतु	2- 3, 4, 9-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 3, 6- 9- 12,
चंद्र	1- 3, 5- 10+
मंगल	1- 3, 5- 10,
बुध	3- 4, 11, 12-
गुरु	3, 4, 6- 9-
शुक्र	1, 4- 10, 11-
शनि	4, 7- 8,
राहु	3, 4, 6- 9-
केतु	2- 10, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	शनि

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

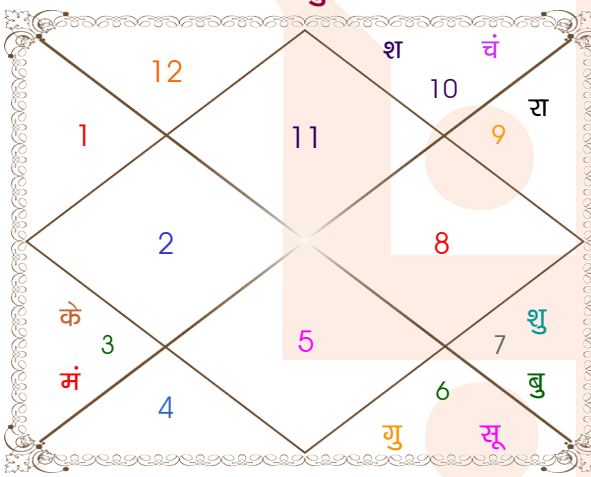

देह विचारः

लग्न कुंडली

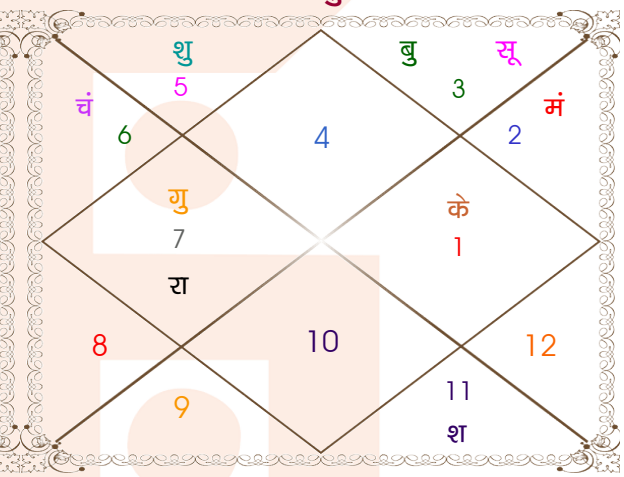

देह विचारः

होरा कुंडली

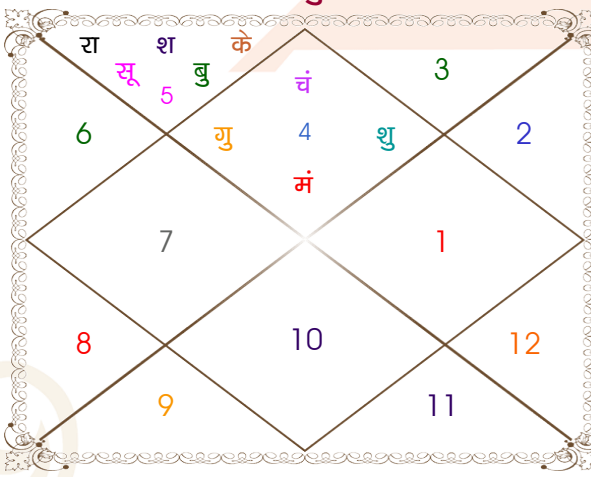

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

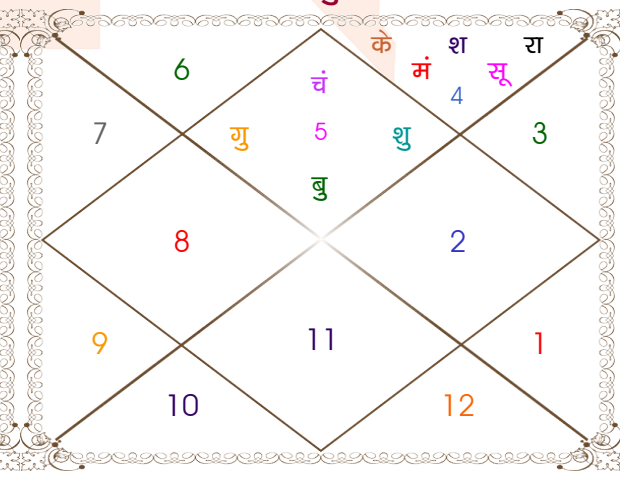

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

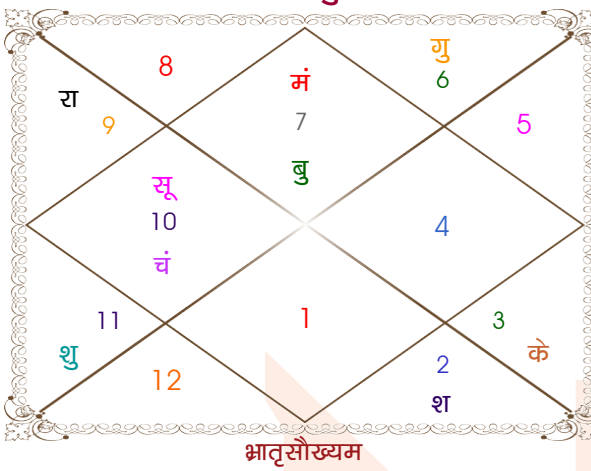

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

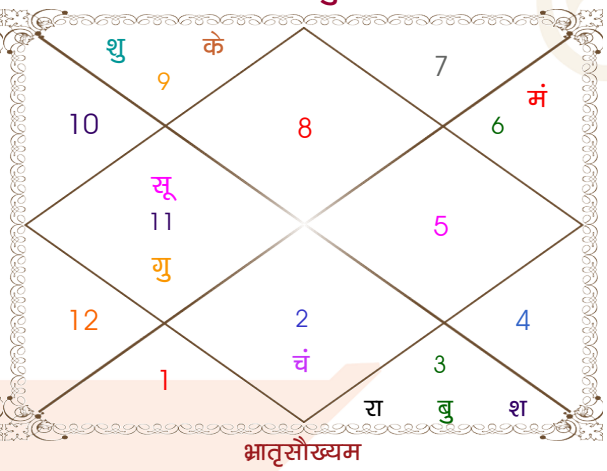

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

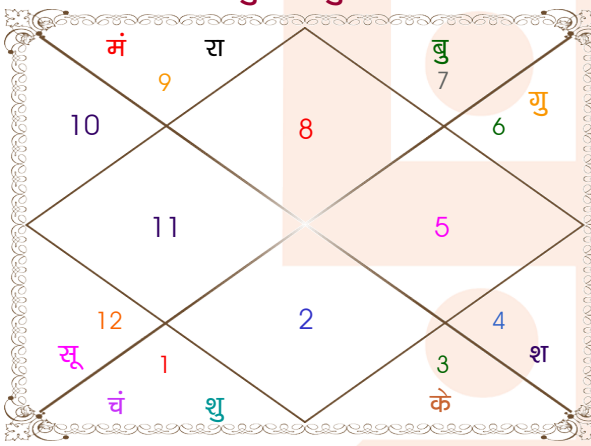

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

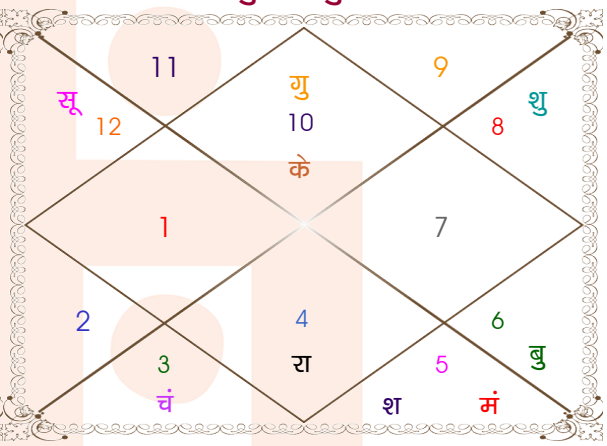

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

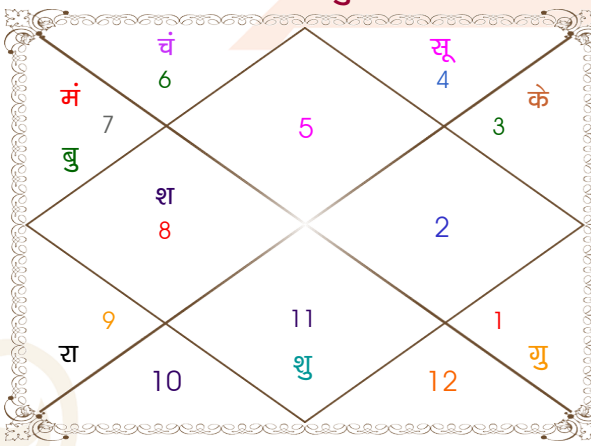

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

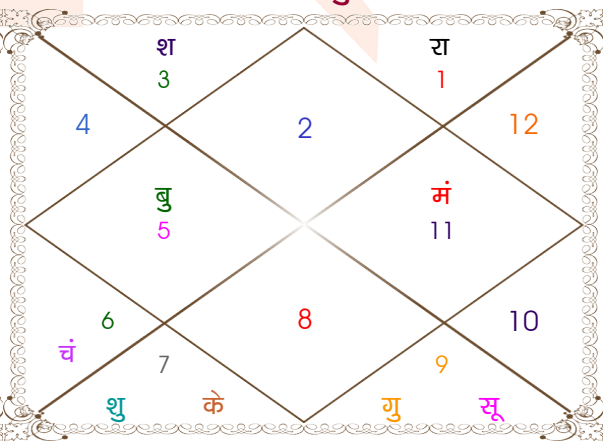

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

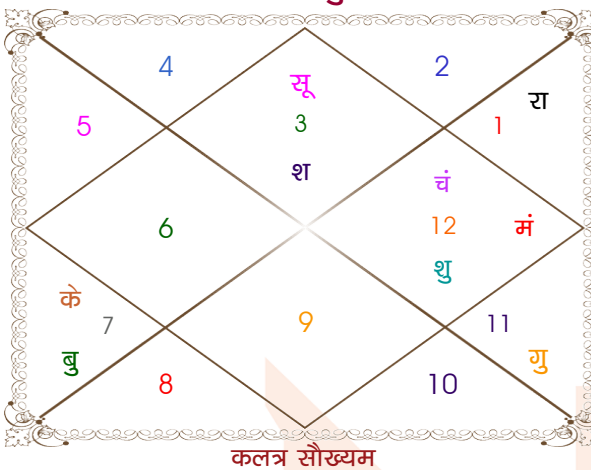

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

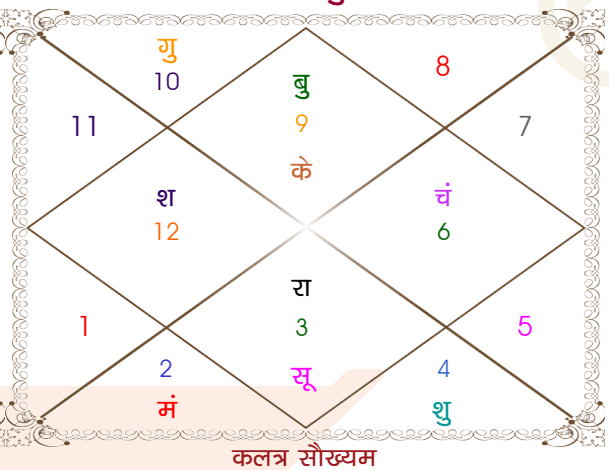

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

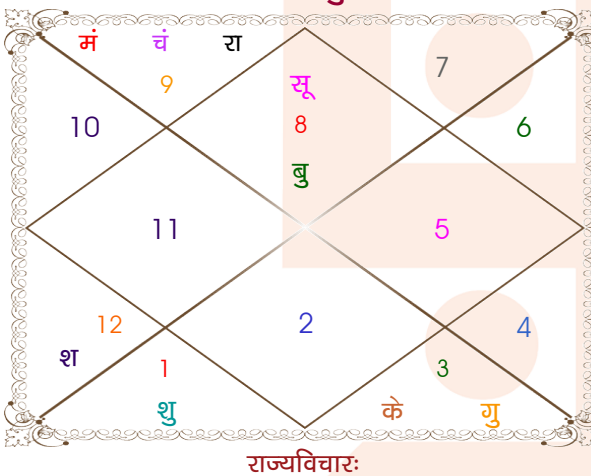

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

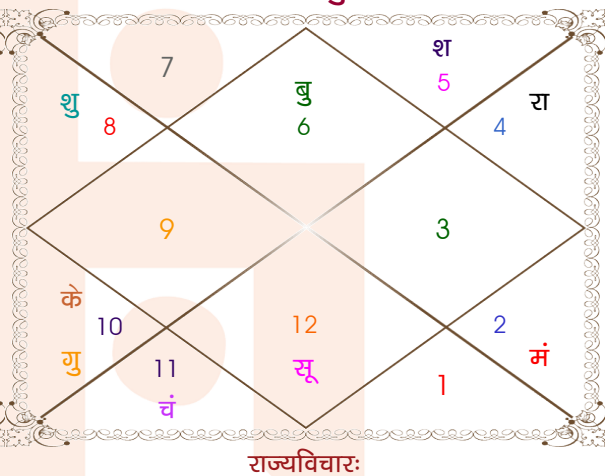

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

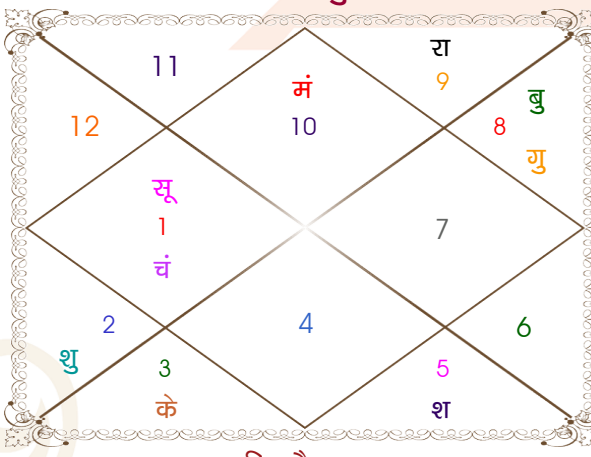

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

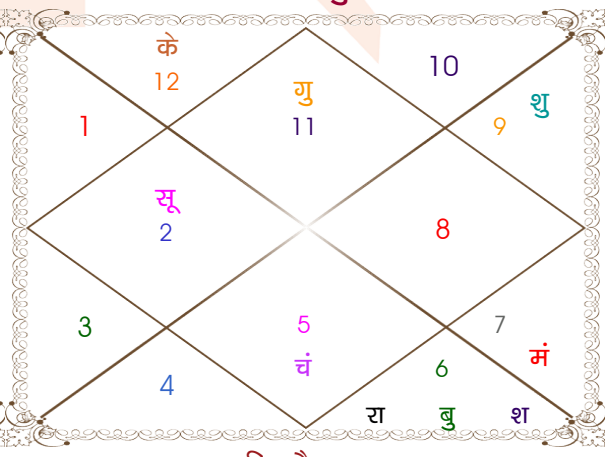

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

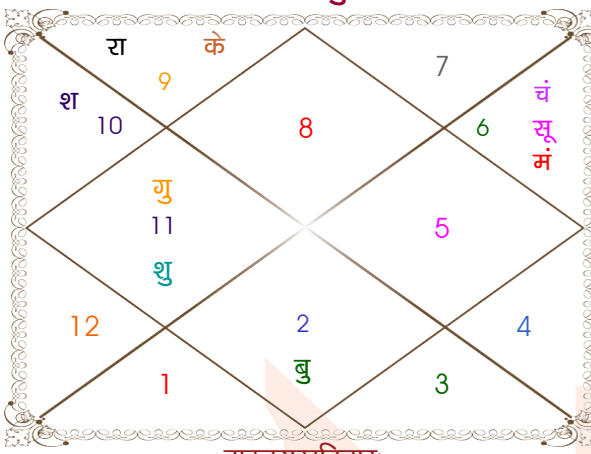

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

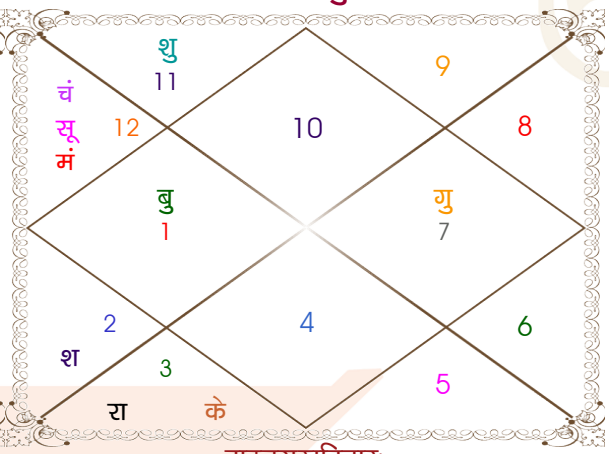

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

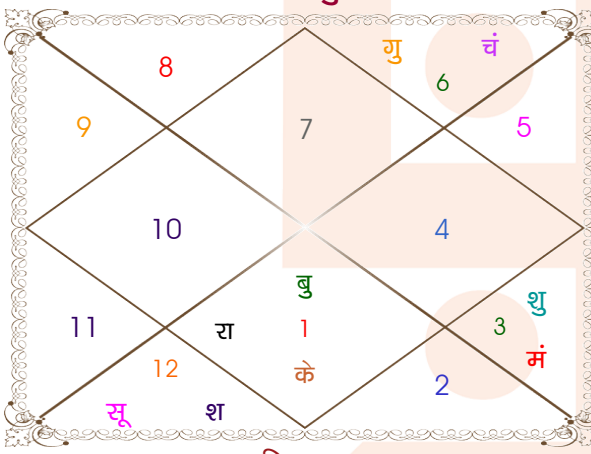

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

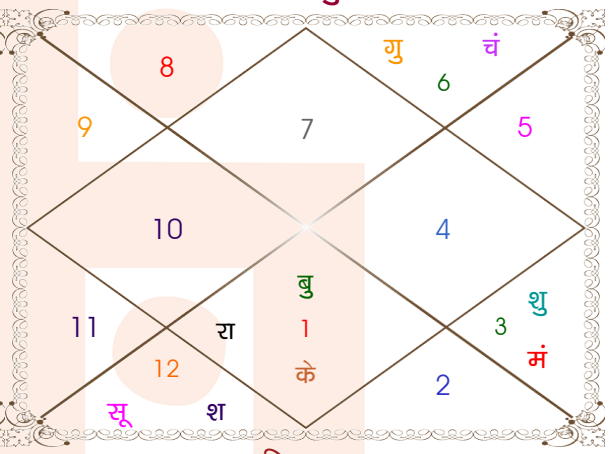

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

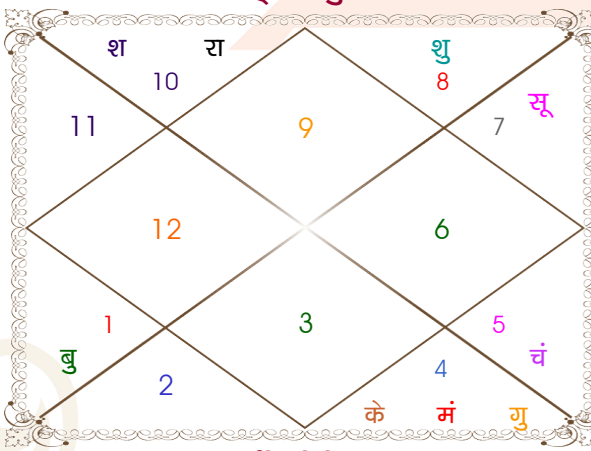

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

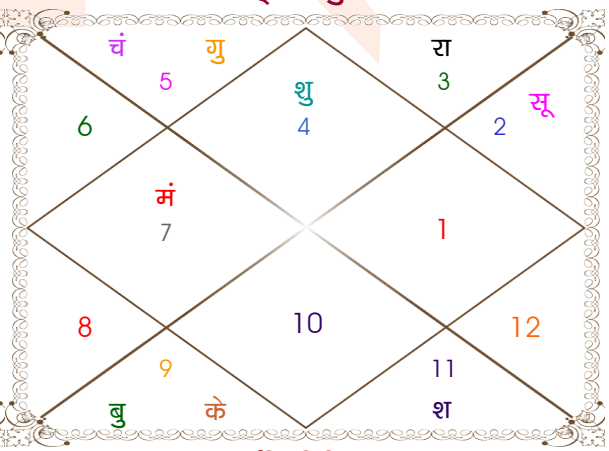

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - JITENDER SINGH

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	सम	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	सम	शत्रु	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	शत्रु	सम	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - PRIYANKA

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	5	3	3	4	4	4	5	5	3	4	6	2	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
बुध	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	4
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	3
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
कुल	3	4	5	3	4	3	3	4	4	3	7	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
कुल	3	3	5	6	2	5	7	3	2	4	5	4	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
चंद्र	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	7
शुक्र	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	7
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
कुल	6	3	5	4	3	5	4	3	5	4	3	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
बुध	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
कुल	4	5	4	3	1	4	3	3	4	4	3	1	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	7
कुल	3	3	2	4	5	3	3	5	3	1	3	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	4	4	4	4	8	3	4	3	4	6	6	4	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
बुध	1	1	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
कुल	5	6	4	2	6	3	6	5	5	1	6	5	54

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
कुल	4	4	6	5	2	4	7	3	4	7	7	3	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	8
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
कुल	6	5	5	6	4	3	4	4	5	6	3	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	5
मंगल	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
कुल	3	4	4	3	5	4	6	6	4	3	6	4	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	5
शुक्र	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	9
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
कुल	6	6	3	4	5	5	6	5	3	3	3	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	1	2	6	3	4	4	4	4	3	2	4	2	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	3
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
कुल	5	2	3	6	1	4	2	2	3	3	4	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	5	3	3	6	4	3	1	5	7	5	4	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
सूर्य	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
मंगल	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
गुरु	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	6	4	4	5	3	4	3	6	3	2	4	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

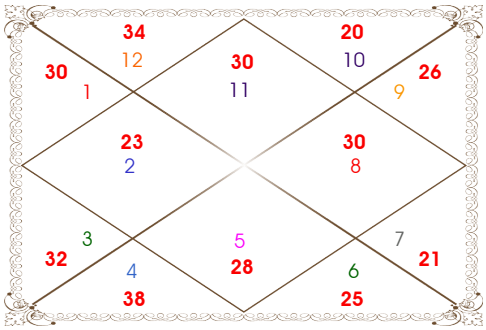

सर्वाष्टकवर्ग

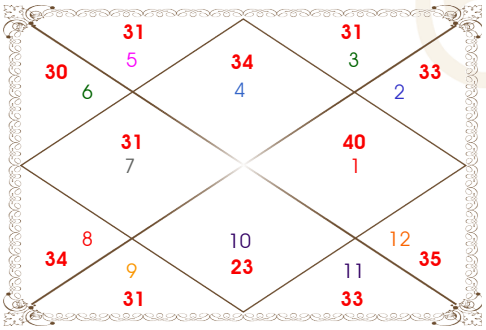

JITENDER SINGH

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	4	4	4	4	3	2	4	2	1	2	6	39
गुरु	3	4	7	7	3	4	4	6	5	2	4	7	56
मंगल	3	1	4	5	4	3	1	4	3	3	4	4	39
सूर्य	5	3	4	6	2	5	3	3	4	4	4	5	48
शुक्र	6	6	4	3	6	4	3	4	4	3	5	4	52
बुध	4	3	4	6	6	4	4	4	4	4	8	3	54
चंद्र	6	2	5	7	3	2	4	5	4	3	3	5	49
बिन्दु	30	23	32	38	28	25	21	30	26	20	30	34	337
रेखा	26	33	24	18	28	31	35	26	30	36	26	22	335

PRIYANKA

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	6	4	4	5	3	4	3	6	3	2	4	5	49
सूर्य	3	4	5	3	4	3	3	4	4	3	7	5	48
चंद्र	6	3	5	4	3	5	4	3	5	4	3	4	49
मंगल	3	3	2	4	5	3	3	5	3	1	3	4	39
बुध	5	6	4	2	6	3	6	5	5	1	6	5	54
गुरु	6	5	5	6	4	3	4	4	5	6	3	5	56
शुक्र	6	6	3	4	5	5	6	5	3	3	3	3	52
शनि	5	2	3	6	1	4	2	2	3	3	4	4	39
बिन्दु	40	33	31	34	31	30	31	34	31	23	33	35	386
रेखा	24	31	33	30	33	34	33	30	33	41	31	29	382

शोध्य पिंड - JITENDER SINGH

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	56	66	69	83	79	112	107
ग्रह पिंड	48	38	74	25	54	23	46
शोध्य पिंड	104	104	143	108	133	135	153

शोध्य पिंड - PRIYANKA

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	64	109	84	76	166	80	115	84
ग्रह पिंड	41	55	40	55	87	46	78	30
शोध्य पिंड	105	164	124	131	253	126	193	114

विंशोत्तरी दशा

सूर्य 0 वर्ष 2 मास 18 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
05/10/1992		23/12/1992		24/12/2002	
23/12/1992		24/12/2002		24/12/2009	
	00/00/0000	चंद्र	24/10/1993	मंगल	22/05/2003
	00/00/0000	मंगल	25/05/1994	राहु	08/06/2004
	00/00/0000	राहु	24/11/1995	गुरु	15/05/2005
	00/00/0000	गुरु	25/03/1997	शनि	24/06/2006
	00/00/0000	शनि	24/10/1998	बुध	21/06/2007
	00/00/0000	बुध	24/03/2000	केतु	18/11/2007
	00/00/0000	केतु	23/10/2000	शुक्र	17/01/2009
	05/10/1992	शुक्र	24/06/2002	सूर्य	24/05/2009
शुक्र	23/12/1992	सूर्य	24/12/2002	चंद्र	24/12/2009

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
24/12/2009		24/12/2027		24/12/2043	
24/12/2027		24/12/2043		24/12/2062	
राहु	05/09/2012	गुरु	10/02/2030	शनि	27/12/2046
गुरु	29/01/2015	शनि	24/08/2032	बुध	05/09/2049
शनि	05/12/2017	बुध	29/11/2034	केतु	15/10/2050
बुध	24/06/2020	केतु	05/11/2035	शुक्र	14/12/2053
केतु	12/07/2021	शुक्र	06/07/2038	सूर्य	26/11/2054
शुक्र	12/07/2024	सूर्य	25/04/2039	चंद्र	27/06/2056
सूर्य	06/06/2025	चंद्र	24/08/2040	मंगल	06/08/2057
चंद्र	06/12/2026	मंगल	30/07/2041	राहु	11/06/2060
मंगल	24/12/2027	राहु	24/12/2043	गुरु	24/12/2062

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
24/12/2062		24/12/2079		24/12/2086	
24/12/2079		24/12/2086		25/12/2106	
बुध	21/05/2065	केतु	21/05/2080	शुक्र	24/04/2090
केतु	19/05/2066	शुक्र	21/07/2081	सूर्य	25/04/2091
शुक्र	19/03/2069	सूर्य	26/11/2081	चंद्र	23/12/2092
सूर्य	23/01/2070	चंद्र	27/06/2082	मंगल	22/02/2094
चंद्र	24/06/2071	मंगल	23/11/2082	राहु	22/02/2097
मंगल	21/06/2072	राहु	12/12/2083	गुरु	24/10/2099
राहु	08/01/2075	गुरु	17/11/2084	शनि	25/12/2102
गुरु	15/04/2077	शनि	27/12/2085	बुध	25/10/2105
शनि	24/12/2079	बुध	24/12/2086	केतु	25/12/2106

मंगल 3 वर्ष 7 मास 27 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
16/07/1994		13/03/1998		13/03/2016	
13/03/1998		13/03/2016		13/03/2032	
	00/00/0000	राहु	23/11/2000	गुरु	01/05/2018
	00/00/0000	गुरु	19/04/2003	शनि	11/11/2020
	16/07/1994	शनि	23/02/2006	बुध	17/02/2023
शनि	12/09/1994	बुध	11/09/2008	केतु	24/01/2024
बुध	09/09/1995	केतु	30/09/2009	शुक्र	24/09/2026
केतु	05/02/1996	शुक्र	30/09/2012	सूर्य	13/07/2027
शुक्र	06/04/1997	सूर्य	24/08/2013	चंद्र	11/11/2028
सूर्य	12/08/1997	चंद्र	23/02/2015	मंगल	18/10/2029
चंद्र	13/03/1998	मंगल	13/03/2016	राहु	13/03/2032

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
13/03/2032		13/03/2051		13/03/2068	
13/03/2051		13/03/2068		13/03/2075	
शनि	17/03/2035	बुध	09/08/2053	केतु	09/08/2068
बुध	24/11/2037	केतु	06/08/2054	शुक्र	09/10/2069
केतु	02/01/2039	शुक्र	06/06/2057	सूर्य	14/02/2070
शुक्र	04/03/2042	सूर्य	13/04/2058	चंद्र	15/09/2070
सूर्य	14/02/2043	चंद्र	12/09/2059	मंगल	11/02/2071
चंद्र	14/09/2044	मंगल	08/09/2060	राहु	01/03/2072
मंगल	24/10/2045	राहु	29/03/2063	गुरु	04/02/2073
राहु	30/08/2048	गुरु	04/07/2065	शनि	16/03/2074
गुरु	13/03/2051	शनि	13/03/2068	बुध	13/03/2075

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
13/03/2075		13/03/2095		14/03/2101	
13/03/2095		14/03/2101		14/03/2111	
शुक्र	13/07/2078	सूर्य	01/07/2095	चंद्र	12/01/2102
सूर्य	13/07/2079	चंद्र	31/12/2095	मंगल	13/08/2102
चंद्र	13/03/2081	मंगल	07/05/2096	राहु	12/02/2104
मंगल	13/05/2082	राहु	31/03/2097	गुरु	13/06/2105
राहु	13/05/2085	गुरु	17/01/2098	शनि	13/01/2107
गुरु	12/01/2088	शनि	30/12/2098	बुध	13/06/2108
शनि	13/03/2091	बुध	06/11/2099	केतु	12/01/2109
बुध	11/01/2094	केतु	14/03/2100	शुक्र	13/09/2110
केतु	13/03/2095	शुक्र	14/03/2101	सूर्य	14/03/2111

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
06/06/2025		06/12/2026		24/12/2027	
06/12/2026		24/12/2027		10/02/2030	
चंद्र	21/07/2025	मंगल	28/12/2026	गुरु	06/04/2028
मंगल	22/08/2025	राहु	23/02/2027	शनि	07/08/2028
राहु	12/11/2025	गुरु	16/04/2027	बुध	26/11/2028
गुरु	24/01/2026	शनि	15/06/2027	केतु	10/01/2029
शनि	21/04/2026	बुध	09/08/2027	शुक्र	20/05/2029
बुध	08/07/2026	केतु	31/08/2027	सूर्य	28/06/2029
केतु	09/08/2026	शुक्र	03/11/2027	चंद्र	01/09/2029
शुक्र	08/11/2026	सूर्य	22/11/2027	मंगल	16/10/2029
सूर्य	06/12/2026	चंद्र	24/12/2027	राहु	10/02/2030

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
24/01/2024		24/09/2026		13/07/2027	
24/09/2026		13/07/2027		11/11/2028	
शुक्र	04/07/2024	सूर्य	09/10/2026	चंद्र	23/08/2027
सूर्य	22/08/2024	चंद्र	02/11/2026	मंगल	20/09/2027
चंद्र	11/11/2024	मंगल	19/11/2026	राहु	02/12/2027
मंगल	07/01/2025	राहु	02/01/2027	गुरु	05/02/2028
राहु	02/06/2025	गुरु	10/02/2027	शनि	22/04/2028
गुरु	10/10/2025	शनि	28/03/2027	बुध	30/06/2028
शनि	13/03/2026	बुध	08/05/2027	केतु	29/07/2028
बुध	29/07/2026	केतु	26/05/2027	शुक्र	18/10/2028
केतु	24/09/2026	शुक्र	13/07/2027	सूर्य	11/11/2028

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
10/02/2030		24/08/2032		29/11/2034	
24/08/2032		29/11/2034		05/11/2035	
शनि	07/07/2030	बुध	19/12/2032	केतु	19/12/2034
बुध	15/11/2030	केतु	05/02/2033	शुक्र	14/02/2035
केतु	08/01/2031	शुक्र	23/06/2033	सूर्य	03/03/2035
शुक्र	11/06/2031	सूर्य	03/08/2033	चंद्र	01/04/2035
सूर्य	27/07/2031	चंद्र	11/10/2033	मंगल	20/04/2035
चंद्र	12/10/2031	मंगल	29/11/2033	राहु	11/06/2035
मंगल	05/12/2031	राहु	02/04/2034	गुरु	26/07/2035
राहु	22/04/2032	गुरु	21/07/2034	शनि	18/09/2035
गुरु	24/08/2032	शनि	29/11/2034	बुध	05/11/2035

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
11/11/2028		18/10/2029		13/03/2032	
18/10/2029		13/03/2032		17/03/2035	
मंगल	01/12/2028	राहु	27/02/2030	शनि	03/09/2032
राहु	21/01/2029	गुरु	23/06/2030	बुध	05/02/2033
गुरु	08/03/2029	शनि	09/11/2030	केतु	10/04/2033
शनि	01/05/2029	बुध	13/03/2031	शुक्र	11/10/2033
बुध	18/06/2029	केतु	04/05/2031	सूर्य	05/12/2033
केतु	08/07/2029	शुक्र	27/09/2031	चंद्र	06/03/2034
शुक्र	03/09/2029	सूर्य	10/11/2031	मंगल	09/05/2034
सूर्य	20/09/2029	चंद्र	22/01/2032	राहु	21/10/2034
चंद्र	18/10/2029	मंगल	13/03/2032	गुरु	17/03/2035

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
05/11/2035		06/07/2038		25/04/2039	
06/07/2038		25/04/2039		24/08/2040	
शुक्र	16/04/2036	सूर्य	21/07/2038	चंद्र	04/06/2039
सूर्य	03/06/2036	चंद्र	14/08/2038	मंगल	03/07/2039
चंद्र	24/08/2036	मंगल	31/08/2038	राहु	14/09/2039
मंगल	19/10/2036	राहु	14/10/2038	गुरु	18/11/2039
राहु	14/03/2037	गुरु	22/11/2038	शनि	03/02/2040
गुरु	22/07/2037	शनि	07/01/2039	बुध	12/04/2040
शनि	24/12/2037	बुध	18/02/2039	केतु	10/05/2040
बुध	11/05/2038	केतु	07/03/2039	शुक्र	30/07/2040
केतु	06/07/2038	शुक्र	25/04/2039	सूर्य	24/08/2040

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
17/03/2035		24/11/2037		02/01/2039	
24/11/2037		02/01/2039		04/03/2042	
बुध	03/08/2035	केतु	17/12/2037	शुक्र	14/07/2039
केतु	29/09/2035	शुक्र	23/02/2038	सूर्य	10/09/2039
शुक्र	11/03/2036	सूर्य	15/03/2038	चंद्र	15/12/2039
सूर्य	29/04/2036	चंद्र	18/04/2038	मंगल	21/02/2040
चंद्र	20/07/2036	मंगल	11/05/2038	राहु	12/08/2040
मंगल	15/09/2036	राहु	11/07/2038	गुरु	14/01/2041
राहु	10/02/2037	गुरु	03/09/2038	शनि	16/07/2041
गुरु	21/06/2037	शनि	06/11/2038	बुध	27/12/2041
शनि	24/11/2037	बुध	02/01/2039	केतु	04/03/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
24/08/2040		30/07/2041		24/12/2043	
30/07/2041		24/12/2043		27/12/2046	
मंगल	12/09/2040	राहु	09/12/2041	शनि	15/06/2044
राहु	03/11/2040	गुरु	05/04/2042	बुध	18/11/2044
गुरु	18/12/2040	शनि	22/08/2042	केतु	21/01/2045
शनि	10/02/2041	बुध	24/12/2042	शुक्र	23/07/2045
बुध	30/03/2041	केतु	13/02/2043	सूर्य	16/09/2045
केतु	19/04/2041	शुक्र	09/07/2043	चंद्र	16/12/2045
शुक्र	15/06/2041	सूर्य	22/08/2043	मंगल	19/02/2046
सूर्य	02/07/2041	चंद्र	03/11/2043	राहु	02/08/2046
चंद्र	30/07/2041	मंगल	24/12/2043	गुरु	27/12/2046

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
04/03/2042		14/02/2043		14/09/2044	
14/02/2043		14/09/2044		24/10/2045	
सूर्य	21/03/2042	चंद्र	03/04/2043	मंगल	08/10/2044
चंद्र	19/04/2042	मंगल	07/05/2043	राहु	08/12/2044
मंगल	10/05/2042	राहु	02/08/2043	गुरु	31/01/2045
राहु	01/07/2042	गुरु	18/10/2043	शनि	05/04/2045
गुरु	16/08/2042	शनि	17/01/2044	बुध	01/06/2045
शनि	10/10/2042	बुध	08/04/2044	केतु	25/06/2045
बुध	28/11/2042	केतु	12/05/2044	शुक्र	31/08/2045
केतु	18/12/2042	शुक्र	16/08/2044	सूर्य	20/09/2045
शुक्र	14/02/2043	सूर्य	14/09/2044	चंद्र	24/10/2045

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
27/12/2046		05/09/2049		15/10/2050	
05/09/2049		15/10/2050		14/12/2053	
बुध	15/05/2047	केतु	29/09/2049	शुक्र	26/04/2051
केतु	11/07/2047	शुक्र	05/12/2049	सूर्य	22/06/2051
शुक्र	22/12/2047	सूर्य	25/12/2049	चंद्र	27/09/2051
सूर्य	09/02/2048	चंद्र	28/01/2050	मंगल	03/12/2051
चंद्र	01/05/2048	मंगल	21/02/2050	राहु	25/05/2052
मंगल	28/06/2048	राहु	22/04/2050	गुरु	26/10/2052
राहु	22/11/2048	गुरु	15/06/2050	शनि	27/04/2053
गुरु	02/04/2049	शनि	18/08/2050	बुध	08/10/2053
शनि	05/09/2049	बुध	15/10/2050	केतु	14/12/2053

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
24/10/2045		30/08/2048		13/03/2051	
30/08/2048		13/03/2051		09/08/2053	
राहु	29/03/2046	गुरु	01/01/2049	बुध	16/07/2051
गुरु	15/08/2046	शनि	27/05/2049	केतु	05/09/2051
शनि	27/01/2047	बुध	05/10/2049	शुक्र	30/01/2052
बुध	23/06/2047	केतु	28/11/2049	सूर्य	14/03/2052
केतु	23/08/2047	शुक्र	01/05/2050	चंद्र	26/05/2052
शुक्र	13/02/2048	सूर्य	17/06/2050	मंगल	17/07/2052
सूर्य	05/04/2048	चंद्र	02/09/2050	राहु	26/11/2052
चंद्र	30/06/2048	मंगल	26/10/2050	गुरु	23/03/2053
मंगल	30/08/2048	राहु	13/03/2051	शनि	09/08/2053

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
14/12/2053		26/11/2054		27/06/2056	
26/11/2054		27/06/2056		06/08/2057	
सूर्य	01/01/2054	चंद्र	14/01/2055	मंगल	20/07/2056
चंद्र	30/01/2054	मंगल	16/02/2055	राहु	19/09/2056
मंगल	19/02/2054	राहु	14/05/2055	गुरु	12/11/2056
राहु	12/04/2054	गुरु	30/07/2055	शनि	15/01/2057
गुरु	28/05/2054	शनि	30/10/2055	बुध	13/03/2057
शनि	22/07/2054	बुध	20/01/2056	केतु	06/04/2057
बुध	09/09/2054	केतु	22/02/2056	शुक्र	13/06/2057
केतु	30/09/2054	शुक्र	29/05/2056	सूर्य	03/07/2057
शुक्र	26/11/2054	सूर्य	27/06/2056	चंद्र	06/08/2057

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
09/08/2053		06/08/2054		06/06/2057	
06/08/2054		06/06/2057		13/04/2058	
केतु	30/08/2053	शुक्र	26/01/2055	सूर्य	22/06/2057
शुक्र	30/10/2053	सूर्य	19/03/2055	चंद्र	18/07/2057
सूर्य	17/11/2053	चंद्र	13/06/2055	मंगल	05/08/2057
चंद्र	17/12/2053	मंगल	12/08/2055	राहु	20/09/2057
मंगल	07/01/2054	राहु	14/01/2056	गुरु	01/11/2057
राहु	02/03/2054	गुरु	31/05/2056	शनि	20/12/2057
गुरु	20/04/2054	शनि	11/11/2056	बुध	02/02/2058
शनि	16/06/2054	बुध	07/04/2057	केतु	20/02/2058
बुध	06/08/2054	केतु	06/06/2057	शुक्र	13/04/2058

योगिनी दशा

संकटा 0 वर्ष 3 मास 14 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
05/10/1992		19/01/1993		19/01/1994	
19/01/1993		19/01/1994		19/01/1996	
	00/00/0000	मंग	29/01/1993	पिंग	28/02/1994
	00/00/0000	पिंग	18/02/1993	धांय	30/04/1994
	00/00/0000	धांय	21/03/1993	भ्राम	21/07/1994
	00/00/0000	भ्राम	30/04/1993	भद्रि	30/10/1994
	00/00/0000	भद्रि	20/06/1993	उल्क	01/03/1995
	00/00/0000	उल्क	20/08/1993	सिद्ध	21/07/1995
	05/10/1992	सिद्ध	30/10/1993	संक	30/12/1995
सिद्ध	19/01/1993	संक	19/01/1994	मंग	19/01/1996

मंगला 0 वर्ष 6 मास 8 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
16/07/1994		23/01/1995		22/01/1997	
23/01/1995		22/01/1997		23/01/2000	
	00/00/0000	पिंग	04/03/1995	धांय	24/04/1997
	00/00/0000	धांय	04/05/1995	भ्राम	23/08/1997
	00/00/0000	भ्राम	24/07/1995	भद्रि	22/01/1998
	00/00/0000	भद्रि	03/11/1995	उल्क	24/07/1998
	16/07/1994	उल्क	04/03/1996	सिद्ध	22/02/1999
उल्क	24/08/1994	सिद्ध	24/07/1996	संक	24/10/1999
सिद्ध	03/11/1994	संक	02/01/1997	मंग	23/11/1999
संक	23/01/1995	मंग	22/01/1997	पिंग	23/01/2000

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
19/01/1996		19/01/1999		19/01/2003	
19/01/1999		19/01/2003		19/01/2008	
धांय	20/04/1996	भ्राम	30/06/1999	भद्रि	30/09/2003
भ्राम	19/08/1996	भद्रि	19/01/2000	उल्क	30/07/2004
भद्रि	19/01/1997	उल्क	19/09/2000	सिद्ध	20/07/2005
उल्क	20/07/1997	सिद्ध	30/06/2001	संक	30/08/2006
सिद्ध	18/02/1998	संक	21/05/2002	मंग	20/10/2006
संक	20/10/1998	मंग	30/06/2002	पिंग	29/01/2007
मंग	19/11/1998	पिंग	19/09/2002	धांय	30/06/2007
पिंग	19/01/1999	धांय	19/01/2003	भ्राम	19/01/2008

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
23/01/2000		23/01/2004		22/01/2009	
23/01/2004		22/01/2009		23/01/2015	
भ्राम	03/07/2000	भद्रि	03/10/2004	उल्क	22/01/2010
भद्रि	22/01/2001	उल्क	03/08/2005	सिद्ध	25/03/2011
उल्क	23/09/2001	सिद्ध	24/07/2006	संक	24/07/2012
सिद्ध	04/07/2002	संक	03/09/2007	मंग	22/09/2012
संक	24/05/2003	मंग	24/10/2007	पिंग	22/01/2013
मंग	04/07/2003	पिंग	02/02/2008	धांय	24/07/2013
पिंग	23/09/2003	धांय	03/07/2008	भ्राम	24/03/2014
धांय	23/01/2004	भ्राम	22/01/2009	भद्रि	23/01/2015

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
19/01/2008		19/01/2014		19/01/2021	
19/01/2014		19/01/2021		19/01/2029	
उल्क	19/01/2009	सिद्ध	31/05/2015	संक	30/10/2022
सिद्ध	21/03/2010	संक	19/12/2016	मंग	19/01/2023
संक	21/07/2011	मंग	28/02/2017	पिंग	30/06/2023
मंग	20/09/2011	पिंग	20/07/2017	धांय	29/02/2024
पिंग	19/01/2012	धांय	18/02/2018	भ्राम	19/01/2025
धांय	20/07/2012	भ्राम	29/11/2018	भद्रि	28/02/2026
भ्राम	21/03/2013	भद्रि	20/11/2019	उल्क	30/06/2027
भद्रि	19/01/2014	उल्क	19/01/2021	सिद्ध	19/01/2029

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
23/01/2015		22/01/2022		22/01/2030	
22/01/2022		22/01/2030		23/01/2031	
सिद्ध	03/06/2016	संक	03/11/2023	मंग	02/02/2030
संक	23/12/2017	मंग	23/01/2024	पिंग	22/02/2030
मंग	04/03/2018	पिंग	03/07/2024	धांय	24/03/2030
पिंग	24/07/2018	धांय	04/03/2025	भ्राम	04/05/2030
धांय	22/02/2019	भ्राम	22/01/2026	भद्रि	24/06/2030
भ्राम	03/12/2019	भद्रि	04/03/2027	उल्क	24/08/2030
भद्रि	22/11/2020	उल्क	03/07/2028	सिद्ध	03/11/2030
उल्क	22/01/2022	सिद्ध	22/01/2030	संक	23/01/2031

योगिनी दशा

संकटा 0 वर्ष 3 मास 14 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
19/01/2029		19/01/2030		19/01/2032	
19/01/2030		19/01/2032		19/01/2035	
मंग	29/01/2029	पिंग	28/02/2030	धांय	20/04/2032
पिंग	18/02/2029	धांय	30/04/2030	भ्राम	19/08/2032
धांय	21/03/2029	भ्राम	21/07/2030	भद्रि	19/01/2033
भ्राम	30/04/2029	भद्रि	30/10/2030	उल्क	20/07/2033
भद्रि	20/06/2029	उल्क	01/03/2031	सिद्ध	18/02/2034
उल्क	20/08/2029	सिद्ध	21/07/2031	संक	20/10/2034
सिद्ध	30/10/2029	संक	30/12/2031	मंग	19/11/2034
संक	19/01/2030	मंग	19/01/2032	पिंग	19/01/2035

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
19/01/2035		19/01/2039		19/01/2044	
19/01/2039		19/01/2044		19/01/2050	
भ्राम	30/06/2035	भद्रि	30/09/2039	उल्क	19/01/2045
भद्रि	19/01/2036	उल्क	30/07/2040	सिद्ध	21/03/2046
उल्क	19/09/2036	सिद्ध	20/07/2041	संक	21/07/2047
सिद्ध	30/06/2037	संक	30/08/2042	मंग	20/09/2047
संक	21/05/2038	मंग	20/10/2042	पिंग	19/01/2048
मंग	30/06/2038	पिंग	29/01/2043	धांय	20/07/2048
पिंग	19/09/2038	धांय	30/06/2043	भ्राम	21/03/2049
धांय	19/01/2039	भ्राम	19/01/2044	भद्रि	19/01/2050

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
19/01/2050		19/01/2057		19/01/2065	
19/01/2057		19/01/2065		19/01/2066	
सिद्ध	31/05/2051	संक	30/10/2058	मंग	29/01/2065
संक	19/12/2052	मंग	19/01/2059	पिंग	18/02/2065
मंग	28/02/2053	पिंग	30/06/2059	धांय	21/03/2065
पिंग	20/07/2053	धांय	29/02/2060	भ्राम	30/04/2065
धांय	18/02/2054	भ्राम	19/01/2061	भद्रि	20/06/2065
भ्राम	29/11/2054	भद्रि	28/02/2062	उल्क	20/08/2065
भद्रि	20/11/2055	उल्क	30/06/2063	सिद्ध	30/10/2065
उल्क	19/01/2057	सिद्ध	19/01/2065	संक	19/01/2066

मंगला 0 वर्ष 6 मास 8 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
23/01/2031		22/01/2033		23/01/2036	
22/01/2033		23/01/2036		23/01/2040	
पिंग	04/03/2031	धांय	24/04/2033	भ्राम	03/07/2036
धांय	04/05/2031	भ्राम	23/08/2033	भद्रि	22/01/2037
भ्राम	24/07/2031	भद्रि	22/01/2034	उल्क	23/09/2037
भद्रि	03/11/2031	उल्क	24/07/2034	सिद्ध	04/07/2038
उल्क	04/03/2032	सिद्ध	22/02/2035	संक	24/05/2039
सिद्ध	24/07/2032	संक	24/10/2035	मंग	04/07/2039
संक	02/01/2033	मंग	23/11/2035	पिंग	23/09/2039
मंग	22/01/2033	पिंग	23/01/2036	धांय	23/01/2040

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
23/01/2040		22/01/2045		23/01/2051	
22/01/2045		23/01/2051		22/01/2058	
भद्रि	03/10/2040	उल्क	22/01/2046	सिद्ध	03/06/2052
उल्क	03/08/2041	सिद्ध	25/03/2047	संक	23/12/2053
सिद्ध	24/07/2042	संक	24/07/2048	मंग	04/03/2054
संक	03/09/2043	मंग	22/09/2048	पिंग	24/07/2054
मंग	24/10/2043	पिंग	22/01/2049	धांय	22/02/2055
पिंग	02/02/2044	धांय	24/07/2049	भ्राम	03/12/2055
धांय	03/07/2044	भ्राम	24/03/2050	भद्रि	22/11/2056
भ्राम	22/01/2045	भद्रि	23/01/2051	उल्क	22/01/2058

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
22/01/2058		22/01/2066		23/01/2067	
22/01/2066		23/01/2067		22/01/2069	
संक	03/11/2059	मंग	02/02/2066	पिंग	04/03/2067
मंग	23/01/2060	पिंग	22/02/2066	धांय	04/05/2067
पिंग	03/07/2060	धांय	24/03/2066	भ्राम	24/07/2067
धांय	04/03/2061	भ्राम	04/05/2066	भद्रि	03/11/2067
भ्राम	22/01/2062	भद्रि	24/06/2066	उल्क	04/03/2068
भद्रि	04/03/2063	उल्क	24/08/2066	सिद्ध	24/07/2068
उल्क	03/07/2064	सिद्ध	03/11/2066	संक	02/01/2069
सिद्ध	22/01/2066	संक	23/01/2067	मंग	22/01/2069

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

5	मूलांक	7
9	भाग्यांक	1
3, 5, 9	मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 1
2, 4, 8	शत्रु अंक	4, 5, 8
23,32,41,50,59	शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुक्र, शनि, मंगल	शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुक्र, शनि, मंगल	शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
कन्या, तुला	मित्र राशि	वृष, मिथुन
वृष, तुला, धनु	मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
नृसिंह	अनुकूल देवता	गणेश
नीलम	शुभ रत्न	मोती
जमुनिया, बिलौर	शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
हीरा	भाग्य रत्न	पुखराज
लौह	शुभ धातु	रजत
काला	शुभ रंग	श्वेत
पश्चिम	शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
संध्या	शुभ समय	संध्या
कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह	दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
उड़द	दान अन्न	चावल
तेल	दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

JITENDER SINGH

जीवन रत्नः	नीलम	कम खर्च, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	हीरा	भाग्योदय, सुख
कारक रत्नः	मूंगा	सन्तति सुख, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
शुभ उपरत्नः	पन्ना	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
	लहसुनिया	सन्तति सुख, भाग्योदय

PRIYANKA

जीवन रत्नः	मोती	पराक्रम, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पुखराज	सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	--- --
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/10/1992-06/03/1993
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/1993-10/08/1995
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/04/1998-05/06/2000
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती द्वितीय ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/01/2017-18/01/2020

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढेसाती तृतीय ढैया	21/07/2022-24/03/2025
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/10/2027-11/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/11/2046-20/07/2049

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढेसाती तृतीय ढैया	17/02/2052-09/09/2054
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/04/2057-22/05/2059
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती प्रथम ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती तृतीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/08/2076-03/01/2079

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दाम्पत्य कलह

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु व रोग

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

JITENDER SINGH

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

PRIYANKA

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। माता-पिता एवं पारिवारिक सदस्य से कभी-कभी जातक नुकसान प्राप्त करता है। विद्याध्ययन में थोड़ी बहुत बाधा आती है। नौकर चाकर सवारी आदि से भी जातक को कोई न कोई चिन्ता परेशानी घेरे रहती है।

इस योग के कारण जमीन-जायदाद, चल-अचल, घर-द्वार सम्बन्धी वस्तुओं पर कभी-कभी थोड़ा बहुत परेशानी आती रहती है। जातक अनेक कामों को एक साथ करता है। पर कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी कोई रोग व्याधि घेर लेती है। जिसमें सामान्य से थोड़ा विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। अर्थात नाजुक हो जाती है और कालान्तर में पुनः आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इसके प्रभाव से जातक को बेवजह चिन्ता-परेशानी ग्रसित कर लेती है। कार्यारम्भ में अनेक प्रकार के व्यवधान उपस्थित हो जाते हैं। जो कालान्तर में वे व्यवधान स्वतः नष्ट हो जाते हैं। जातक कितना भी परिश्रम कर ले पर सुख प्राप्ति में बाधा व संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। इस योग के प्रभाव से व्यवसाय के क्षेत्र में जातक को सफलता मिलती है और राजनीति एवं नौकरी में सफलता प्राप्त होती है और सामाजिक मान सम्मान भी प्राप्त होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।

5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	नकुल	व्याघ्र	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	बुध	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	मकर	कन्या	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	17.50		

कुल : **17.5 / 36**

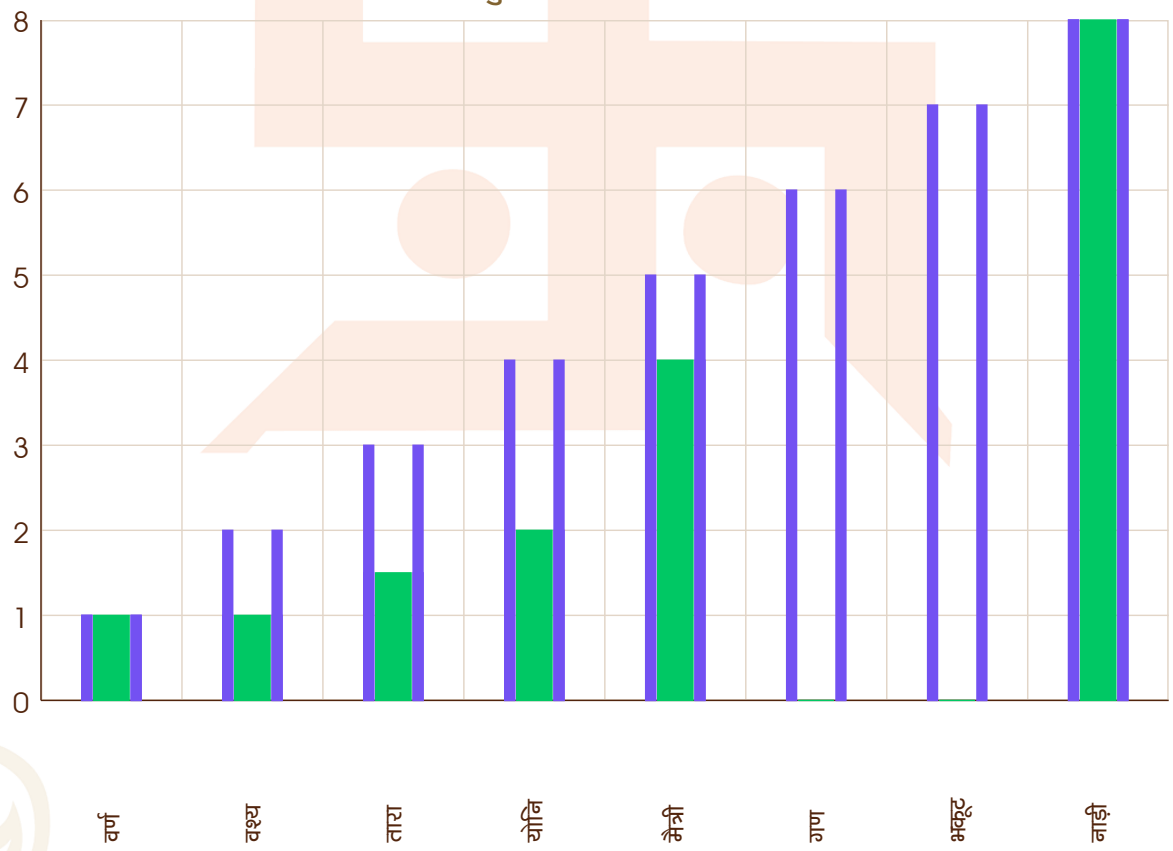

अष्टकूट मिलान

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

JITENDER SINGH का वर्ग सिंह है तथा PRIYANKA का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गो में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार JITENDER SINGH और PRIYANKA का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

JITENDER SINGH मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

PRIYANKA मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

JITENDER SINGH तथा PRIYANKA में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

JITENDER SINGH का वर्ण वैश्य है तथा PRIYANKA का वर्ण भी वैश्य है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इसके कारण JITENDER SINGH और PRIYANKA दोनों की सोच भौतिकवादी सोच होगी तथा रूपये-पैसे को ज्यादा महत्व देंगे। JITENDER SINGH और PRIYANKA दोनों मितव्ययी होंगे तथा भविष्य के लिए धन का संचय करना पसन्द करेंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विचारों का सम्मान कर तथा आपस में विचार-विमर्श करके ही बुद्धिमत्तापूर्वक निवेश करेंगे।

वश्य

JITENDER SINGH का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं PRIYANKA का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि पशु एवं मनुष्य के स्वभाव एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं अतः दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग हो सकते हैं किंतु फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में रहेंगे। फिर भी कभी-कभी मनुष्य निर्दयी एवं आक्रामक हो जाता है। इसी प्रकार JITENDER SINGH एवं PRIYANKA एक-दूसरे के साथ रहकर अपने जीवन का आनंद लेते रहेंगे किंतु कभी-कभी PRIYANKA क्रूर एवं अमर्यादित व्यवहार का प्रदर्शन करती रहेगी।

तारा

JITENDER SINGH की तारा मित्र तथा PRIYANKA की तारा विपत है। PRIYANKA की तारा विपत होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। यह मिलान JITENDER SINGH एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्य एवं नुकसान का कारण बन सकता है। परन्तु कड़े एवं लगातार प्रयासों के बाद परिणाम सुखदायी हो सकता है। संभव है कि PRIYANKA का रुख सहयोगात्मक नहीं हो तथा आपसी विश्वास, प्रेम एवं समझ की कमी बनी रहे। अक्सर पति एवं पत्नी के बीच संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े रह सकते हैं तथा बच्चे भी इसका गलत फायदा उठायेंगे। जिसके कारण संभव है कि बच्चे योग्य एवं आज्ञाकारी नहीं हों।

योनि

JITENDER SINGH की योनि नकुल है तथा PRIYANKA की योनि व्याघ्र है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध

संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में JITENDER SINGH का राशि स्वामी PRIYANKA के राशि स्वामी से मित्र का संबंध रखता है। जबकि PRIYANKA का राशि स्वामी JITENDER SINGH के राशि स्वामी के साथ सम का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को सम मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

JITENDER SINGH का गण मनुष्य तथा PRIYANKA का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। अतः PRIYANKA का निर्दयी, निष्ठुर एवं कड़ा स्वभाव रहेगा जिसके कारण JITENDER SINGH एवं उसके परिवार के सदस्यों का जीवन कष्टपूर्ण हो सकता है। साथ ही पति-पत्नी के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा बना रह सकता है। जिसके कारण तलाक एवं मुकदमे की संभावना भी बन सकती है।

भकूट

JITENDER SINGH से PRIYANKA की राशि नवम भाव में स्थित है तथा PRIYANKA से JITENDER SINGH की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। JITENDER SINGH की प्रवृत्ति लॉटरी,

सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

JITENDER SINGH की नाड़ी अन्त्य है तथा PRIYANKA की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

JITENDER SINGH की राशि भुमितत्व युक्त तथा PRIYANKA की राशि भी भूमितत्व युक्त कन्या राशि है। अतः तत्वों की समानता के कारण JITENDER SINGH और PRIYANKA के मध्य स्वभावगत समताएं विद्यमान रहेंगी तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी। फलतः वैवाहिक जीवन में सुख शान्ति रहेगी। अतः यह मिलान अच्छा रहेगा।

JITENDER SINGH की राशि का स्वामी शनि तथा PRIYANKA की राशि का स्वामी बुध परस्पर सम एवं मित्रराशियों में पड़ते हैं। अतः इसके प्रभाव से JITENDER SINGH और PRIYANKA के आपसी संबंधों में मधुरता होगी तथा एक दूसरे के प्रति मन में प्रेम सहयोग तथा सहानुभुति का भाव रहेगा। साथ ही एक दूसरे की कमियों की अपेक्षा एवं गुणों पर ध्यान देंगे फलतः पारिवारिक स्नेह के भाव में प्रगाढता होगी तथा सुख दुख में एक दूसरे को सहयोग प्रदान करेंगे। अतः JITENDER SINGH और PRIYANKA का दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा सुखद क्षणों की अनुभूति करते रहेंगे।

JITENDER SINGH और PRIYANKA की राशियां परस्पर पंचम तथा भाव में पड़ती हैं शास्त्रानुसार यह एक भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से JITENDER SINGH और PRIYANKA के उपरोक्त शुभ प्रभावों में न्यूनता रहेगी तथा मित्रता के स्थान पर शत्रुता एवं विरोध का भाव उत्पन होगा। साथ ही एक दूसरे की कमियों पर विशेष ध्यान देकर अनावश्यक समस्याओं तथा विवादों को उत्पन करेंगे। अतः इनका वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त परस्पर श्रेष्ठता तथा अहंकार का भाव भी रहेगा। अतः सामंजस्य तथा बुद्धिमता से ही शुभ फल प्राप्त होंगे।

JITENDER SINGH का वश्य जलचर तथा PRIYANKA का वश्य मानव है। मानव तथा जलचर में नैसर्गिक विषमताओं के कारण अभिरूचियों में भिन्नता रहेगी तथा रारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं अलग रहेंगी। साथ ही कामसंबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे। अतः दाम्पत्य जीवन मध्यम रहेगा।

JITENDER SINGH तथा PRIYANKA का वर्ण वैश्य है। अतः इसके प्रभाव से दोनों की प्रवृति धनार्जन में रहेगी तथा वाणिकबुद्धि से कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धन को जीवन में विशेष महत्व प्रदान करेंगे।

धन

JITENDER SINGH और PRIYANKA दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य

जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

JITENDER SINGH की नाड़ी अन्त्य तथा PRIYANKA की नाड़ी मध्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे। इसके प्रभाव से इनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को परिश्रम एवं पराक्रम से सिद्ध करने में समर्थ होंगे। साथ ही मंगल भी इन दोनों के लिए शुभ ही रहेगा तथा इनके स्वास्थ्य पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः इनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार उत्तम वैवाहिक जीवन के लिए यह मिलान श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

यथोचित समय पर संतति प्राप्ति की दृष्टि से JITENDER SINGH और PRIYANKA का मिलान विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें संतति प्राप्ति में विलम्ब होगा तथा बच्चों के मध्य भी जन्म समय में असामान्य अंतर रहेगा जिससे उनके पालन पोषण में यदा कदा असुविधा की अनुभूति होगी। इसके साथ ही JITENDER SINGH और PRIYANKA की संतति में पुत्र तथा कन्याओं की संख्या समान रहेगी।

PRIYANKA के मन में अन्य सामान्य महिलाओं की तरह प्रसव के विषय में चिन्ता तथा भय का भाव व्याप्त रहेगा परन्तु PRIYANKA को ऐसी अनावश्यक चिन्ताओं से मुक्त रहना चाहिए क्योंकि उनका प्रसव सामान्य रूप से सम्पन्न होगा तथा इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक कष्ट या परेशानी उत्पन्न नहीं होगी। तथापि सावधानी वश PRIYANKA को गर्भावस्था में उचित डाक्टरी परीक्षण नियमित रूप से करवाते रहना चाहिए। इससे वह सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में समर्थ होंगी तथा स्वयं का स्वास्थ्य भी अनुकूल रहेगा। साथ ही PRIYANKA के पति एवं सास-ससुर भी उससे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

बच्चों की अनुकूल प्रगति से JITENDER SINGH और PRIYANKA उनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा बच्चे भी अपनी व्यवहार कुशलता योग्यता तथा बुद्धिमता से अपने क्षेत्र में सफलता एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। साथ ही अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर तथा आज्ञा पालन का भाव रहेगा परन्तु पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा एवं उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार JITENDER SINGH और PRIYANKA का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

PRIYANKA के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि PRIYANKA धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से PRIYANKA के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी PRIYANKA का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी PRIYANKA से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

JITENDER SINGH के अपनी सास से सामान्य संबध रहेंगे। वह अपनी ओर से उन्हें पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा के प्रति भी तत्पर रहेंगे। इनके मध्य कोई विशेष मतभेद नहीं रहेंगे तथा JITENDER SINGH अवसरानुकूल सपत्नीक से मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी।

ससुर के प्रति भी JITENDER SINGH का आदर तथा सेवा का भाव रहेगा तथा वे भी इनको पूर्ण स्नेह तथा सहानुभूति प्रदान करेंगे साथ ही ससुर भी समय समय पर महत्वपूर्ण मामलों में JITENDER SINGH का दिग्दर्शन करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों के साथ संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मतभेद एवं तनाव की बहुलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रतिद्वन्दिता तथा ईर्ष्या का भी भाव रहेगा। लेकिन यदि JITENDER SINGH तथा वे आपस में सामंजस्य रखें तो संबधों में अनुकूलता आ सकती है। इस प्रकार ससुराल में JITENDER SINGH के संबध सामान्यतया अच्छे ही रहेंगे।

JITENDER SINGH

आपका जन्म दिनांक पाँच होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक पाँच होता है। इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश आप रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट रहेंगे। यदि आप नौकरी का मार्ग चुनते हैं तो ऐसा रोजगार आपको अधिक पसन्द आयेगा। जहाँ लेन-देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुधग्रह के प्रभाववश आपके अन्दर वाक्पटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहेगी एवं सामने वाले व्यक्ति को आप अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। आप हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। आप थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले भी रहेंगे। जल्दबाजी के चक्कर में आप कभी-कभी हानियों का भी सामना करेंगे।

आपकी मानसिक स्थिति चंचल होने से आपको शीघ्र क्रोध आ जाया करेगा एवं कभी-कभी चिड़चिड़ाहट भी रहा करेगी। आप अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यों में रुचि लेंगे। इस कारण आपकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में आपको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ेगा।

मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण-अवगुण आपके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन-पठन की ओर आपकी विशेष रुचि रहेगी।

PRIYANKA

आपका जन्म दिनांक 16 है। एक एवं छः के योग से आपका मूलांक 7 होता है । मूलांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु एवं पाश्चात्य मत से नेपच्यून होता है। अंक एक का सूर्य तथा 6 का शुक्र है । इन तीनों ग्रहों सूर्य, शुक्र, केतु या नेपच्यून का प्रभाव आपके जीवन में निरन्तर चलता रहेगा। मूलांक 7 के प्रभाव से आपकी अभिरुचि ललित कलाओं में रहेगी। आपको गीत-संगीत, लेखन, काव्य, चलचित्र, दूरदर्शन इत्यादि में लगाव रहेगा।

कल्पनाशक्ति आपकी काफी अच्छी रहेगी। धन संग्रह में आपको कठिनाईयां आयेंगी इससे अर्थ के क्षेत्र में आप कमी महसूस करेंगी। घूमने-फिरने की शौकीन होने के कारण आप लम्बी यात्रायें करेंगी जिनसे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। अतीन्द्रिय ज्ञान आपके अन्दर काफी अच्छा रहेगा, जिससे दूसरों के विचार या बात को आप आसानी से समझ जायेंगी।

अंक एक एवं छः के स्वामी सूर्य, शुक्र ग्रह के प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी, दृढ़प्रतिज्ञ, अडिग एवं सौन्दर्यबोध को समझने वाली होंगी। आप अपने जीवन में काफी संघर्ष करेंगी, लेकिन अन्त में संघर्षों पर विजय प्राप्त करेंगी एवं सफलता अर्जित करेंगी। आपको स्वच्छता अधिक पसन्द आयेगी एवं सभी वस्तुऐं करीने से सजी हों तथा घर ऑफिस में सुन्दर

बैठक हो ऐसी आपकी मनोवृत्ति रहेगी। दूरस्थ देशों से आपको लाभ प्राप्त होगा। आप रोजगार-व्यापार में ऐसी लाइन का चुनाव करेंगी, जिसमें दूरस्थ देशों से निरन्तर सम्पर्क बना रहे तथा उनसे लाभ मिले। नेपच्यून, शुक्र एवं सूर्य के संयुक्त प्रभाववश आपको प्रारम्भ में संघर्ष करना पड़ेगा। पश्चात् मध्य अवस्था से अन्तिम अवस्था तक उन्नति की सीढ़ियां चढ़ती चली जायेंगी।

JITENDER SINGH

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगे। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगे, जहाँ आपकी हूकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगे। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगे। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगे।

PRIYANKA

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाली स्पष्ट वक्ता होंगी। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाली यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाली शूरवीर महिला के रूप में पहचान स्थापित करेंगी। आपका जीवन चक्र एक मुखिया की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचारधारा पर निर्भीक चलेंगी। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगी। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगी। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगी, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

JITENDER SINGH

आपका जन्म पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में कुंभ लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मिथुन का नवमांश एवं तुला राशि का द्रेष्काण भी उदित हुआ था। इस लग्नादिक समन्वय स्थिति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपके जीवन का प्रारूप चमत्कृत नियमावली में अंकित है। आपका जीवन गप-शप एवं सुखद वातावरण में व्यतीत होगा तथा आप पर्याप्त धन-दौलत से युक्त संपन्न एवं आपका घर-परिवार प्रसन्न रहेंगे।

आप धनोपार्जन के कलाकार एवं मास्टर हैं। आप दूसरे के साथ उदार भावनाओं से युक्त सहायता करने वाले हैं। आप शीघ्रता पूर्वक पर्याप्त मात्रा में धनोपार्जन कर उसे सुरक्षित कर सकेंगे। आप निश्चित रूप से आलसी नहीं है। आप महत्वपूर्ण विषयों का गहनतापूर्वक अध्ययन कर उस कार्यक्रम को विकसित करने के प्रति रूचिवान रहेंगे। आप धर्म दर्शन शास्त्र का सदैव अध्ययन कर सकेंगे। आपके लिए कार्य-व्यवसायों में अनुकूल धार्मिक एवं दार्शनिक कार्य, ज्योतिषीय कार्य, भाषा ज्ञान का कार्य शैक्षणिक कार्य एवं राजनीति के कार्य लाभदायक पथ हैं। आप इन चिह्नित कार्य-व्यवसायों में से कोई भी कार्य व्यवसायों का चयन कर सकते हैं।

आप वास्तव में उच्च स्तरीय विषयों पर चिंतन करने से दिलचस्पी रखते हो। आप मृत्यु के पश्चात जीवन की क्या गति होती है। इसके संबंध में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो। आप यदा-कदा ऐसा सोचते है कि सभी कुछ को त्याग कर जीवन दर्शन का ध्यान साधना करें।

अन्यथा आप अपने कार्य व्यवसाय के संबंध में अत्यंत व्यस्त रहने वाले व्यवस्थित प्राणी हैं। आप भीड़-भाड़ से बच कर सिर के बल सर्वप्रथम प्रमुख विषयों का अध्ययन कर अपनी कार्य योजना को विकसित करने की कार्य शैली पर विचार करते हो। दूसरी बात यह है कि आप अपने पक्ष में उत्कृष्ट पहुंच प्राप्त करने के लिए सामर्थ्यवान है। आप विधि पूर्वक किसी भी कार्य को संपन्न करने हेतु सक्षम प्राणी हैं।

परंतु आपके सभी समर्पित कार्य विश्वसनीयता के माध्यम से संचालित होता है। बल्कि आप धनोपार्जन हेतु कोई गलत ढंग मार्ग या पहुंच नहीं चाहते। आप दूसरों के माध्यम से उपर्युक्त विषयों के संबंध में (खुलम खुल्ला) प्रत्यक्ष रूप से अव्यवस्थित मूल्यांकन करना नहीं चाहते। आपसे संबंधित कुछ मित्र विजय श्री प्राप्त करना चाहते हैं। परंतु आपको सतर्क रहना चाहिए। आप अत्यंत सावधान रह कर, अपने निकट संबंधियों का ध्यान रखें, क्योंकि कुछ लोग आपकी योजना के प्रति धोखा-धड़ी करके आपकी सफलता को अवरूद्ध कर स्वयं आगे निकल जाएं।

जहां तक आपके समक्ष स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएं बिल्कुल ठीक है। परंतु आयु की वृद्धि के साथ-साथ कतिपय रोगादि सामान्य कुप्रभाव डाल सकते हैं, जिसके आधार पर आपको अधिक चिंताग्रस्त बना सकता है। अतः आप रक्तचाप, मिरगी, जॉनडिस, ट्यूमर आदि

रोगों के प्रति समय-समय पर अपने चिकित्सक से विचार-विमर्श करना उत्तम होगा। आपके उत्तम घरेलू वातावरण के प्रभाव से भी आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप अपने गृहस्थाश्रम के संबंध में भाग्यशाली हैं, क्योंकि आपके जीवन में बुद्धिमती पत्नी एवं समझदार पुत्र आपके आनंददायक जीवन में सहायक होंगे।

ऐसा संदेह है कि आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं अथवा नहीं? आप एक अत्यंत समृद्धिशाली व्यक्ति के समान धनी हो जाओगे। परंतु कुछ समय के बाद आप आवश्यकता के अनुरूप अपने को बना लेंगे। आप में एक परिश्रमी कार्य कर्त्ता के गुण विद्यमान हैं तथा आप धैर्यपूर्वक किसी कार्य के परिणाम की प्रतीक्षा करते हैं। सब कुछ के बाद आप धन को ही प्राथमिकता नहीं देते तथा निरंतर इसके पीछे नहीं पड़े रहते हैं। परंतु मात्र सांसारिक आवश्यकता हेतु आवश्यक है।

आप सदैव अंक 2, 3, 7 एवं 9 अंक पर भरोसा रख सकते हैं तथा इस अंक की प्रधानता देते हुए इसका व्यवहार अपने जीवन में कर सकते है क्योंकि ये अंक आपके लिए हितकर है। इसके अतिरिक्त अंक 1, 4, 5 एवं 8 अंक आपके लिए अव्यवहारणीय है।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, लाल, पीला एवं क्रीम रंग है। परंतु नारंगी, नीला एवं हरा रंग आपके लिए प्रतिकूल एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन बुधवार, शनिवार एवं शुक्रवार का दिन लाभदायक है। परंतु शेष सोमवार, मंगलवार एवं रविवार, का दिन अव्यवहारणीय है।

PRIYANKA

आपका जन्म अश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में मेदिनीय क्षितिज पर कर्क लग्नोदय काल हुआ था। कर्क राशि के लग्नोदय संयोजन से धनु राशि के नवमांश के साथ-साथ वृश्चिक द्रेष्काण भी उदित था। अर्थात् आप अपने जीवन में सम्पूर्णतः सफल होंगे। कर्क राशीय प्रभाव से आपका व्यक्तिव गुणयुक्त है तथापि आपका जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा। आपको अपनी मानसिक खिन्नता को अपदस्थ करना होगा तथा आप अति समृद्धशाली धनी होकर अपना सुखद जीवन व्यतीत करेंगी।

कर्क राशीय प्रभाव से आपका आचरण भविष्यवक्ता की भाँति होगा। आप में यह गुण विद्यमान है कि आप महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादन कर अर्थ संग्रह करेंगी। धनु राशीय नवमांश के प्रभाव से आपको सदैव उचित दिशा निर्देशन प्राप्त होता रहेगा। परन्तु आपके जन्म नक्षत्र के प्रभाव से यह संभव है कि आपके स्वभाव को कृतघ्नतापूर्ण तथा आपके व्यवहार को अविश्वसनीय कर दे। आप अपनी नकारात्मक दृष्टिकोण को त्यागकर ही अपने चारित्रिक विकास हेतु सकारात्मक दिशा का व्यवहारिकता प्रदान कर सकती हैं, इन घटनाओं के फलस्वरूप यह संभव है कि मुख्यतः आप अपनी आयु के तैतीसवें वर्ष में धनी होकर लाभांश प्राप्त करेंगी।

यदि आप अपने हीनभावनात्मक स्वभाव का परित्याग कर दें तो आपकी हीन

भावना समाप्त होकर मनोबल उच्च हो जाएगा तथा आपको कार्य-व्यवसाय के कार्यान्वयन में सहायक होकर आपके साहसिक प्रवृति एवं आत्म संतुष्टि को सुनिश्चित करेगा। यदि आप नियत समय पर अपनी पहुँच को व्यवहारिक रूप देने का प्रयत्न करें तो सफलता प्राप्त कर सकती हैं। परन्तु आप किसी पथ पर अग्रसर होकर अकस्मात् आलस्य के कारण सुनिश्चित क्षेत्र के प्रवेश काल अर्थात् कार्यारम्भ के समय विराम करती हैं। परिणामस्वरूप आपकी सफलता संदिग्ध तथा आप असफल रह जाती हैं।

आप निश्चयपूर्वक अपने प्रतिद्वन्द्वी से आशंकित नहीं रहती परन्तु अपने तथाकथित उलझन एवं विवादों को अच्छी प्रकार त्याग कर सावधानी पूर्वक धीरे-धीरे, मंदगति से अपने उद्देश्यित लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए। आपकी द्विविधात्मक व्यक्तित्व सदैव आपको पारिवारिक सदस्यों के समक्ष परीक्षित होगा कि आपका पारिवारिक सम्बन्ध कैसा है।

कर्क राशीय प्रभावानुसार आपको परिवार के प्रति पूर्ण समर्पित एवं कल्याण हेतु त्याग करना चाहिए। परंतु आपके लिए यह निर्देशन है कि इनके साथ अस्वाभाविक संबंध स्थापित न करे। आपको ध्यानपूर्वक यह विचार करना उत्तम है कि चाहे जो कुछ भी हो इनके किसी भी प्रकार की उत्तेजनात्मक प्रवृति का अनुभव करें।

यदि आप कार्य योजना की प्रस्तावना के अनुरूप आचरण करें तो आप बहुत अधिक धन सम्पति बना सकती हैं। आपके लिए अभिष्ट कार्य व्यवसाय जल से संबंधित होना उपयुक्त है। यथा सिचाई विभाग, कृषि विभाग, तटबंध, पुल, जहाजरानी के कार्य अनुकूल है। यदि आप चाहें तो ट्रेवल ऐजेन्सी एवं ज्योतिषीय कार्य कलाप भी अपना सकती हैं। आप गले के संक्रमण रोग, उदासीनता, मनोरोग एवं शारीरिक उष्णता संबंधी रोग से प्रभावित हो सकती है-अस्तु समय-समय पर अपने परिवारिक चिकित्सक से मिलकर आरोग्यात्मक विचार ग्रहण करना चाहिए।

आपके लिए भाग्यशाली अंक 4 एवं 6 अंक अनुकूल एवं प्रदोलित करने वाला है। आपके लिए प्रतिकूल अंक 3 एवं 5 अंक है जो सर्वथा त्यागनीय है।

आपके लिए भाग्यशाली रंग पीला, लाल, सफेद एवं क्रीम रंग है। हरा और ब्लू रंग त्यागनीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार एवं शनिवार पूर्ण आनन्द प्रदायक नही होगा। मंगलवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन सफलता प्रदायक होगा। बुधवार का दिन चिन्तनीय एवं व्ययकारी होगा। परन्तु रविवार का दिन सचेत रहने योग्य है।

JITENDER SINGH

आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, गण मनुष्य , नाड़ी अन्त्य, योनि नकुल तथा वर्ग सिंह होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "जी" या "जि" अक्षर से होगा यथा- जितेन्द्र, जीवनाथ।

आप समाज में एक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथा योग्य सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप सात्विक गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा तामसिकता का प्रायः अभाव रहेगा। विषम परिस्थितियों में भी आप शान्त चित्त से समस्याओं का सामना करेंगे तथा बिना किसी चिन्ता या घबराहट के उनका समाधान करेंगे। आप को जीवन में सर्वप्रकार के सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा आनन्दपूर्वक आप इनका उपभोग कर सकेंगे। धनादि से आप युक्त रहेंगे तथा इसका अभाव की आपको अनुभूति नहीं होगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आप स्वपरिश्रम से ज्ञानार्जन करके उसमें विद्वता प्राप्त करेंगे। साथ ही कई कार्यों को करने में भी आप दक्ष रहेंगे। अतः आप लोगों के मध्य प्रसिद्ध तथा आदरणीय होंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

आप के स्वभाव में हमेशा विनम्रता का भाव रहेगा एवं अन्य जनों से आप अत्यन्त विनयपूर्वक व्यवहार करेंगे जिससे वे सब आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा रहेंगी तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं के अनुपालन में आप तत्पर रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या भी अधिक मात्रा में रहेगी तथा सभी मित्रों से आपको पूर्ण सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप एक कृतज्ञ पुरूष होंगे तथा अन्य व्यक्तियों के द्वारा उपकृत होने पर पूर्ण रूप से उनका उपकार स्वीकार करके उनके प्रति आभार प्रकट करेंगे। साथ ही समाज के सभी वर्गो में आप लोकप्रिय रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

आपका शारीरिक कद लम्बा होगा तथा शरीर भी स्थूलता से युक्त रहेगा। आप में साहस तथा वीरता का गुण विद्यमान रहेगा एवं अपने अधिकाँश कार्यों को साहस से ही सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त कलह तथा विवाद आदि में आप शत्रुपक्ष को पराजित करने में भी सामान्यतः सफलता अर्जित करेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

आप में स्वभाव से ही दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी तथा जरूरतमन्द लोगों तथा संस्थाओं को आप यथाशक्ति दान देते रहेंगे तथा समाज में ख्याति एवं आदर प्राप्त करेंगे। आप प्रायः सत्कार्यों को करने में ही रूचिशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे एवं दुष्कर्मों की सर्वथा उपेक्षा करेंगे। आपके शुभ कार्यों को करने से अन्य सामाजिक लोग भी लाभान्वित होंगे तथा आपसे हमेशा प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। धनवान एवं वैभव शाली होने के कारण आपका समाज में पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को मन से स्वीकार करेंगे। आप समस्त परिवारिक सुखों से युक्त रहकर पुत्र एवं पत्नी के साथ सुखपूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक रहेगा।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोळभिमानी।।
जातकाभरणम्

PRIYANKA

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि व्याघ्र, गण राक्षस, वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का आरम्भ "पो" अक्षर से होगा।

आप एक धर्मनिष्ठ महिला होंगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं आदर की भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप अपने पति एवं पुत्रों सहित हमेशा सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगी। आपको जो प्राप्त होगा उसी का सदुप्रयोग करके जीवन सुख एवं आनन्दमय बनाएंगी। धनैश्वर्य तथा धान्य आदि का आपके पास अभाव नहीं रहेगा इनसे आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगी।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

नये नये वस्त्रों को धारण करने के प्रति आपका शौक रहेगा साथ ही गले में सुन्दर हार अथवा आभूषणों से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपकी आंखे सुन्दर तथा शारीरिक सौन्दर्य मनोहर एवं आकर्षक रहेगा जिसे देखकर अन्य लोग भी आपसे शीघ्र ही प्रभावित होंगे।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

आपकी स्वभाव की एक विशेषता यह होगी कि आप अपने मनोभावों को हमेशा अपने ही मन में गुप्त रखेंगी तथा कभी भी किसी अन्य व्यक्ति को इसके बारे में नही बताएंगी। अपनी इस प्रवृति का आप आजीवन पालन करेंगी। समाज के सभी वर्गो के लोगों पर आपका समान रूप से प्रभाव रहेगा तथा सभी लोगों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा आदर की

प्राप्ति होगी।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अपने शत्रुओं का दमन करने में आप हमेशा सफल रहेंगी तथा अपने पराक्रम से उन्हे कभी भी मुँह उठाने का अवसर नहीं देंगी। साथ ही नीति शास्त्र की आप अच्छी ज्ञाता होंगी तथा नीतियों के पालन करने या करवाने में आप अत्यन्त निपुण रहेंगी। आप विभिन्न प्रकार की वेशभूषा को भी धारण करने की इच्छुक रहेंगी साथ ही शास्त्रों के ज्ञानार्जन में भी आप सफलता प्राप्त करेंगी तथा आपकी बुद्धि शास्त्रज्ञान में संलग्न रहेगी।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

JITENDER SINGH

मकर राशि में पैदा होने के कारण आप की शारीरिक लम्बाई अधिक होगी तथा ललाट भी विस्तृतता से युक्त रहेगा। आपकी आखें अत्याधिक सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। आपके कान तथा कंठ दीर्घाकृति से युक्त होंगे। संगीत के प्रति आपका विशेष रूझान रहेगा तथा इसका आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। शीत से आप अत्यन्त ही भयभीत रहेंगे एवं इसे सहने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। सत्यानुपालन में आप हमेशा तत्पर रहेंगे एवं इसके प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रदर्शन भी करेंगे। साथ ही बाह्य रूप से दिखाने के लिए आप पूर्ण रूप से धर्माचरण करेंगे। आप अपने समाज में एक सम्मानीय पुरूष होंगे तथा दूर दूर के क्षेत्रों में आपकी प्रसिद्धि फैली रहेगी। आपका स्वभाव अल्प मात्रा में क्रोधी भी रहेगा तथा कामभावना की आप में अधिकता रहेंगी एवं कई बार इससे आप व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। समाज के सभी लोगों के प्रति आपके मन में प्रेम का भाव रहेगा तथा किसी से भी द्वेष या घृणा करना आपको उचित नहीं लगेगा। आपका अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्तियों से विशेष लगाव रहेगा तथा उनसे आप अधिकतर मित्रता के इच्छुक रहेंगे। लेखन कार्य में रूचिशील होने के कारण आपको काव्य शास्त्र में सफलता अर्जित हो सकेगी। आप में उत्साह का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा कभी कभी अपनी लोलुपता की प्रकृति से अपने लिए अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप हमेशा अपने पुत्र एवं पत्नी सहित परिवार के भरण पोषण में व्यस्त रहेंगे तथा दिखावे के लिए धर्मानुपालन की प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। साथ ही आपकी कमर पतली रहेंगी। आप जल्दी ही अन्य लोगों की बातों से प्रभावित हो जाएंगे तथा उनके कथनानुसार ही आचरण करने के लिए भी शीघ्र उद्यत रहेंगे। आप में आलस का भाव भी रहेगा अतः स्वकार्य आपकी धीरे धीरे ही सम्पन्न होंगे लेकिन आप हमेशा एक सौभाग्यशाली पुरूष दौरान आपकी-अधिकाँश शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल द्वारा सिद्ध हो जाएंगे। यात्रा एवं घूमने फिरने के आप विशेष शौकीन रहेंगे तथा आपका काफी समय यात्रा एवं भ्रमण में व्यतीत होगा। आपमें शारीरिक बल मध्यम रूप से विद्यमान रहेगा। अगम्य स्थानों अर्थात जहां आसानी से न पहुचां जा सके ऐसे स्थानों में जाने की आपकी प्रवृति रहेगी साथ ही कठिन तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए भी आप सर्वदा तत्पर रहेंगे। यदा कदा आप अपनी प्रवृति में कठोरता के भाव का भी समावेश करेंगे तथा जीवन में कई बार वात से उत्पन्न रोगों से पीड़ित एवं व्याकुल रहेंगे। इसके अतिरिक्त सद्गुणों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे तथा जीवन में पूर्ण रूप से इसका अनुपालन करेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवार में आप मध्यम रूप से सम्मान प्राप्त करेंगे परन्तु कुल की परम्परा की वृद्धि करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका पालन करेंगे। स्त्री से आप प्रायः पराजित ही रहेंगे एवं अपने समस्त सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार या सलाह से सम्पन्न करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप का व्यक्तित्व अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा सुन्दर स्त्रियों के द्वारा आपको हमेशा प्रशंसा तथा सम्मान प्राप्त होगा। माता के प्रति आपका विशेष सम्मान का भाव रहेगा तथा उनका भी आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा। आप पुत्र संतति से भी युक्त रहेंगे। आपका स्वबन्धु वर्ग से विशेष स्नेह रहेगा तथा वे भी आपको पूर्ण हादिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा जीवन में धन का सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। त्याग की भावना कभी आपके अर्न्तमन में नित्य विद्यमान रहेंगी तथा अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का आप अन्य जनों के लिए प्रदर्शित करते रहेंगे। साथ ही आपके अधिकाँश भृत्यगण सुन्दर एवं गुणवान होंगे तथा आदरपूर्वक आपकी सेवा करेंगे। आपका परिवार के सदस्य संख्या अधिक रहेगी एवं सुख प्राप्ति के लिए आप सदैव चिन्तनशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आपको अपने जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन सम्पति को उपभोग करने का सुअवसर प्राप्त होगा तथा आप आनन्द पूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। आप अन्य व्यक्तियों के कल्याण के लिए नित्य चिन्तन करेंगे तथा यथाशक्ति उनकी सहायता तथा भलाई करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। साथ ही सलाह देने के कार्य में भी आप निपुण होंगे तथा लोग समय समय पर आपकी इस प्रवृति से लाभान्वित होते रहेंगे। विविध प्रकार के कार्यों को करने की आप में पूर्ण क्षमता विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग के आप पालनकर्ता होंगे एवं उन्हे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही आप वीरता के गुणों से भी सम्पन्न रहेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

संगीत शास्त्र के प्रति आप समर्पित रहेंगे तथा इस क्षेत्र में पूर्ण मान सम्मान तथा ख्याति अर्जित करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं कान्ति तथा लावण्यता का इसमें समावेश रहेगा। इसके साथ ही कामभावना की प्रवलता भी आप में रहेगी तथा इससे कभी कभी आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर एवं सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर एवं सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सावधानी रखें।

यदि आपके लिए समय ठीक न चल रहा हो मन में चिन्ता, शरीर में व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट नृसिंह भगवान की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए एवं शनिवार के उपवास रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाओं आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में कमी आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभफलों के प्रभाव में भी वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

PRIYANKA

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा शरीर एवं शरीर के अन्य अंग मुख, कान, दान्त तथा आंखे भी दर्शनीय तथा सौन्दर्य से सुशोभित रहेंगे। आप एक उच्च श्रेणी की विदुषी भी होंगी तथा कई शास्त्रों का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। विभिन्न धार्मिक संस्थाओं से आपके संबंध बने रहेंगे तथा इनकी आप संचालिका या अध्यक्षा आदि उच्च पदाधिकारी होंगी। धर्म के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा एवं विश्वास रहेगा तथा नियमपूर्वक आप इसका पालन करेंगी। आप हमेशा मधुरता से युक्त प्रिय वाणी का उपयोग करेंगी। जिससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे साथ ही सत्य एवं शुद्धता का भी आप प्रयत्नपूर्वक पालन करेंगी। आप हमेशा धैर्य के सद्गुण से सुशोभित रहेंगी तथा सभी कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। संसार के सभी जीवों के प्रति आपके मन में करूणा

तथा सहानुभूति रहेगी। आप किसी को भी दुःख नहीं देंगी तथा न देने देंगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य लोगों की भलाई के लिए भी आजीवन प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही क्षमाशीलता का भाव भी आपके हृदय में विद्यमान रहेगा। आपके पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की संख्या से अल्प होगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

गमन करते समय आपकी दृष्टि लज्जामय तथा आलस्य युक्त होकर सुन्दर एवं आकर्षक होगी। जीवन में आप अधिकांश सुखों का ही उपभोग करेंगी दुःख अल्प मात्रा में ही सहन करने पड़ेंगे। आपके शरीर की लावण्यता दर्शनीय होंगी। विभिन्न प्रकार की कलाओं का आप चतुराई से प्रदर्शन करेंगी तथा इनके विषय में आपको अच्छा एवं विषद् ज्ञान रहेगा। शास्त्र तत्वों की आप ज्ञाता होंगी। तथा धर्म का नियमपूर्वक पालन करेंगी। आप किसी मित्र, संबंधी या किसी अन्य व्यक्ति के मकान एवं धनादि का भी अपने जीवन में प्रयोग कर सकेगी। विदेश जाने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगी। तथा अपने उददेश्य में अन्ततः सफलता भी प्राप्त कर सकेंगी।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

अन्य जनों को आप अपनी विशिष्ट भाव भंगिमाओं के द्वारा अपनी ओर आकृष्ट करने तथा उन्हें प्रसन्न करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही वे भी आपसे हमेशा सन्तुष्ट रहेंगे। सामाजिक लोगों के साथ आपका स्वभाव अत्यन्त ही विनम्र एवं मधुर रहेगा जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपकी संतति अधिक मात्रा में उत्पन्न होगी। अच्छे कार्यो को सम्पन्न करने में भी हमेशा आपकी रूचि रहेंगी। साथ ही सौभाग्य से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को भाग्यबल से ही जीवन में सिद्ध करेंगी।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि हमेशा स्वच्छ एवं निर्मलता से युक्त रहेगी तथा किसी के साथ भी आप धोखा आदि दुष्कार्यों को सम्पन्न नहीं करेंगी। आपकी रूचि तथा बुद्धि दोनो लेखन कार्य में प्रवृत रहेंगी। अतः काव्य की रचना करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके स्वभाव में

चंचलता का अभाव रहेगा एवं शान्त भाव से समस्त कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ होगा परन्तु यदा कदा नेत्र कष्ट से दुःख की अनुभूति करेंगी साथ ही गुरूजनों के प्रति आपका सेवाभाव रहेगा तथा यत्नपूर्वक उनके हितकार्यों में तत्पर रहेंगी।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आपकी प्रकृति विलासी होगी तथा समस्त भौतिक एवं विलासमय साम्रगी से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सज्जन एवं विद्वान लोगों के प्रति आप हमेशा श्रद्धालु रहेंगी तथा ये लोग भी आपसे हमेशा प्रसन्न रहेंगे। आप में दानशीलता का भाव भी सर्वथा विद्यमान रहेगा तथा समयानुसार इस प्रवृति का आप पालन करती रहेंगी। वैदिक धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा नियमपूर्वक इसका जीवन में अनुपालन करेंगी। समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोकप्रियता प्राप्त करेंगी। अभिनय तथा संगीत की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा आजीवन इनसे अपना संबंध बनाये रखेंगी। साथ ही विदेश में बसने की इच्छा की भी प्रबलता आपके मन में होगी।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप संसार के समस्त भौतिक पदार्थो का अपने जीवन में पूर्ण रूप से उपयोग करने में सफल होंगी। साथ ही श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त होकर आप कई विद्याओं की ज्ञाता रहेंगी।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रांरम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यो में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में

अशुभ फलों की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा बुधवार एवं गणेश चतुर्थी के उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरित वस्त्र, मूंग की दाल घी इत्यादि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके समस्त अशुभ फल नष्ट होंगे तथा शुभ फलों की वृद्धि होकर भविष्य के लिए लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता भी प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं शीं बुधाय नमः।

पाया विचार

JITENDER SINGH

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

PRIYANKA

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

JITENDER SINGH

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप की प्रवृति धार्मिक होगी एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर इनकी पूजा तथा सेवा भी करते रहेंगे। यदा कदा आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप दया एवं करूणा के भाव से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस भावना का समयानुसार पालन करते रहेंगे। आप शारीरिक बल से परिपूर्ण रहेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार की कलाओं के विषय में भी आपका अच्छा ज्ञान रहेगा। आप नाना प्रकार के शास्त्रों के विद्वान के रूप में ख्याति अर्जित कर सकेंगे। आपका सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य लोगों के भी आप सुख प्रदाता होंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

समाज में आपको हादिक मान सम्मान प्राप्त होगा तथा समस्त प्रकार के वैभव ऐश्वर्य के आप स्वामी रहेंगे। आपके नेत्रों की आकृति विशाल रहेगी एवं निशाने बाजी की कला में आप चतुराई का प्रदर्शन करके इसमें विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगे। आपका वर्ण गौर वर्ण रहेगा एवं अपने नगर के आप प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय नागरिक होंगे तथा सभी लोग आपकी आज्ञा मानने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।
गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे।।
मानसागरी

PRIYANKA

राक्षस गण में जन्म लेने के कारण आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक बोलने की होगी। आपके हृदय में करूणा के भाव की अल्पता रहेगा तथा लेकिन साहस के गुण से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा समस्त सांसारिक कार्यों को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगी। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित भी हो जाएंगी। किसी भी कार्य को करने के लिए तत्पर रहेंगी। शारीरिक बल से आप युक्त रहेंगी तथा अन्य जनों से विवाद करने में भी निपुण रहेंगी।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल रह सकती हैं। आपकी मुखाकृति भी सुन्दर होगी। साथ ही कभी कभी आपकी वाणी अत्यन्त ही कटु होगी जिससे अन्य लोग आपसे

अप्रसन्न रहेंगे। अतः अन्यजनों से वार्तालाप के समय यत्पूर्वक आपको मधुर शब्दों का ही उपयोग करना चहिए।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

योनी फलादेश

JITENDER SINGH

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही परोपकारी प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबंधी कार्यों में अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे एवं अन्य जनों को यथा शक्ति अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। अपने इन कार्यों से आपकी समाज में पूर्ण ख्याति होगी एवं सभी लोग आपका हादिक सम्मान करेंगे। आप एक धनाढ्य पुरुष होंगे तथा अन्य धनवान लोग भी आपका आदर एवं सम्मान करेंगे। आप एक महान विद्वान तथा कई संस्थाओं में प्रमुख पद पर रहेंगे। माता पिता का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आप भी उनकी हादिक सेवा शुश्रूषा करते रहेंगे।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

PRIYANKA

व्याघ्र योनि में जन्म लेने के कारण अन्य स्वच्छन्द प्रकृति की महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्य कलापों को बिना किसी व्यवधान या हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगी। साथ ही धन संचय करने की भी आपकी प्रवृति रहेगी। आप अच्छी बातों तथा गुणों को भी शीघ्र ग्रहण करेंगी तथा अपने क्षेत्र में पूर्ण रूप से प्रशिक्षित तथा विशेषज्ञा होंगी जिससे सामाजिक जनों में आपका पूर्ण रूप से प्रभाव विद्यमान रहेगा। धनैश्वर्य से आप सर्वदा सम्पन्न रहेंगी। लेकिन आप अपने आप ही मुहँ से अपनी प्रशंसा करेंगी जिसका लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

JITENDER SINGH

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

PRIYANKA

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट

नहीं होने देंगी।

JITENDER SINGH

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

PRIYANKA

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

JITENDER SINGH

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

PRIYANKA

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव

उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

JITENDER SINGH

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

PRIYANKA

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

JITENDER SINGH

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

PRIYANKA

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

JITENDER SINGH

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

PRIYANKA

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

JITENDER SINGH

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

PRIYANKA

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

JITENDER SINGH

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

PRIYANKA

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

ग्रह फल – केतु

JITENDER SINGH

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

PRIYANKA

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचलता के भाव से युक्त रहते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये प्रारम्भ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रहता है परन्तु धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है। साथ ही आधुनिकता के भाव से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रूचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी भी प्रकार से भेद भाव की भावना इनमें नहीं रहती है अध्ययन के प्रति इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल नेतृत्व प्राप्त करने में भी सफल रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश कार्य कलापों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही रहेगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आप सूक्ष्म दृष्टि के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप प्रारंभ से ही पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के रहेंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के द्वारा जीवन में सफलताएं अर्जित करेंगे। धनैश्वर्य की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन होगा।

समाज में आप एक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा सपरिवार उनका उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रूचिशील दौरान आपकी- उत्कृष्ट कार्यों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। साथ ही यदा कदा आप आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगे। अतः ऐसी प्रवृति पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित

लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगे।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शांत स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्छल भाव इनके अंदर विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते है तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। धर्म के प्रति ये श्रद्धालु होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में इनकी इच्छा रहती है। दूसरे लोगों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये चतुर होते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को अर्जित करने में सफलता प्राप्त करते हैं जिससे समाज में इनको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुदंर एवं दर्शनीय होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आप एक विदुषी तथा बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी प्रायः अच्छी रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा।

लग्न में लग्नेश चन्द्रमा की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी एवं अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से करेंगी। इनमें आपको सफलताएं भी प्राप्त होगीं जिससे आपके सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर होंगी।

आप एक कर्तव्यपरायण महिला होंगी तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। इससे आपके कार्य क्षेत्र के प्रभाव में सतत वृद्धि होगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगी। साथ ही मित्रों में भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय समझीं जाएंगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत होगा। संतति से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी विद्यमान रहेगी फलतः अन्य जनों के उपकार को आप स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार प्रकट करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अवसरानुकूल सम्पन्न करती रहेंगी। जल क्रीड़ा के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इससे आपको आनंद की अनुभूति होगी। ज्यौतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा होगी तथा इसके ज्ञानार्जन में भी रूचिशील होंगी।

इस प्रकार आप शांत, दृढ़-प्रतिज्ञ, कर्तव्यपरायण, परिश्रमी एवं साहसी महिला होंगी तथा जीवन में सर्व सुखों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभवित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उद्देश्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्यों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप कम बोलना पसंद करेंगी तथा सामान्यतया शान्त रहना ही आपको अच्छा लगेगा। आप आवश्यकता एवं अवसरानुकूल ही सार्थक वार्तालाप करेंगी। जीवन में वैभव शाली पदार्थों की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेगी। आपकी प्रवृति शीघ्र कोधित होने की रहेगी परन्तु शीघ्र कोधित होकर शीघ्र शान्त भी हो जाएंगी। परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को सुख सुविधाएं प्रदान करेंगी। आपको पैतृक सम्पति की भी प्राप्ति होगी तथा अन्य मूल्यवान धातु एवं द्रव्यों से भी युक्त रहेंगी।

जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप समय समय पर प्राप्त करती रहेंगी। साथ ही गृह एवं वाहन आदि का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा। आपकी वाणी स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपकी मृदुवाणी से प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आपके ठोस तर्को से सभी लोग आपसे

सामान्यतया सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप यथोचित व्यय करेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कार्य कलापों का भी समय समय पर आयोजन करती रहेंगी। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन करने में भी समर्थ रहेंगी। इस प्रकार आप तथा भाग्यशाली, परोपकारी, धार्मिक प्रवृति से युक्त तथा समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मेष राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा बौद्धिक कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति भी होंगे। जीवन में भाईयों के सुख एवं सहयोग को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। यद्यपि उनका स्वभाव तेज होगा परन्तु बुद्धिमता से युक्त दौरान आपकी- प्रति वे आज्ञाकारी एवं कर्तव्य परायण रहेंगे। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। यदा कदा आप लोगों के मध्य वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप हृदय से विशाल होंगे तथा अन्य जनों के प्रति आपके मन में दया तथा सहानुभूति की भावना विद्यमान रहेगी। इसके साथ ही आप अपने ही तरीके से सोचेंगे तथा उसी को कार्य रूप में परिणित करेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप आधुनिक संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन , वाहन, दूरदर्शन आदि उपकरणों से भी युक्त रहेंगे। संगीत या कला आदि के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समयानुसार आप इससे मनोंरजन करेंगे । दूर समीप की यात्राओं से आपको समय समय पर लाभ होगा तथा इससे आपकी ख्याति में वृद्धि होगी। अच्छी एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तको को पढ़ने में आपकी रूचि रहेगी साथ ही लेखन कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सज्जनों से मित्रता करने वाले परोपकारी तथा विद्वान होंगे एवं सरकार से समय समय पर सम्मान प्राप्त करते रहेंगे।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही अवसरानुकूल उनकी भलाई के कार्यो को सम्पन्न करती रहेंगी। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए परस्पर एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा यदा कदा अधिक वार्तालाप भी करेंगी। आपको अपने क्षेत्र में श्रेष्ठता या नेतृत्व प्राप्त होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही आप एक कुशल वक्ता होंगी तथा भाषा पर भी पूर्ण अधिकार रहेगा।

आधुनिक संचार की सुख सुविधाओं से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक टेलीफोन, दूरदर्शन या वाहन आदि का उपभोग करेंगी। आप संगीत प्रिय होंगी तथा कला के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा आपका कंठ मधुर रहेगा फलतः अन्य लोग आपकी मधुर आवाज

से प्रभावित रहेंगे। लेकिन सर्वप्रथम अपने सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगी उसके बाद ही संगीत संबंधी कार्य सम्पन्न करेंगी। समय समय पर आपकी समीपस्थ यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आपको ख्याति तथा लाभ अर्जित होगा तथा पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध स्थापित करेंगी । नीति की भी आप ज्ञाता होंगी तथा आम चुनाव, लेख लिखने या पुस्तक प्रकाशन आदि से लाभ तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या की ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव एवं मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी।

JITENDER SINGH

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आवश्यक सांसारिक सुखों से युक्त होंगे तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी सम्पन्न होंगे एवं जीवन में उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्धिशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी स्तर उन्नत होगा।

सामान्यतया जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी इसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपके नाम हो सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य में अभि वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा परंतु विवाद युक्त सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए।

आपका आवास सामान्यतया अच्छा होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप नित्य तत्पर होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सज्जन होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख की प्राप्ति होगी तथा युवावस्था से ही आप वाहन का उपयोग करना प्रारंभ करेंगे जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी पारिवारिक जनों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी फलतः सभी सदस्य उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों एक दूसरे के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे तथा सुख-दुःख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे परंतु परस्पर मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है। अतः यदि आप परस्पर सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों में मधुरता आ सकती है। साथ ही माता से आपको अवसरानुकूल नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति भी होती रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको परिश्रम करना पड़ेगा तभी वांछित सफलताएं मिल सकती है। स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में भी आत्मविश्वास एवं परिश्रम के भाव का प्रदर्शन करना पड़ेगा लेकिन यदि आप स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा आदि करें तो इससे आपके आसानी से सफलता मिलेगी तथा अपने भविष्य का निर्माण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव मे तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा गुरू भी नवमेश होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में

समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की आपको प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से युक्त होंगी एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप अपने सौभाग्य एवं बुद्धिमता से भी सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगी। इससे आपके ऐश्वर्य में अभिवृद्धि होगी तथा समाज में यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से इसमें नित्य वृद्धि करने में तत्पर होंगी। विवाह के बाद पति के सहयोग एवं प्रभाव से भी न्यूनाधिक मात्रा में आप चल एवं अचल सम्पत्ति प्राप्त करेंगी। आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ के योग बनते है। अतः यदि आप चल सम्पत्ति पर विशेष व्यय करें तो इसमें आपको वांछित सफलता मिल सकती है।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सुन्दर एवं आकर्षक होगा। आप आधुनिक उपकरणों से इसे सुसज्जित रहेंगी तथा सफाई का विशेष ध्यान रहेंगी। आपका घर भी किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगी एवं आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन की भी प्राप्ति होगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी सुन्दर स्वस्थ शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से सभी जनों को प्रभावित करेंगी। परिवार के सभी लोग उनसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव रहेगा तथा समय समय पर आपको सहयोग प्रदान करती रहेंगी। अन्य क्षेत्रों में भी आपकी उन्नति में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। आप भी उनकी आज्ञा का पालन करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त आपसी संबंधो में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंको को अर्जित करेंगी। अपने इन्हीं गुणों से आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगी तथा इसमें आपको विशिष्ट सम्मान भी मिल सकता है। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल होगा। इसके अतिरिक्त स्वजन एवं मित्र भी आपको यथोचित आदर एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे जिससे आप दुगुने उत्साह से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

षष्ठेश वृहस्पति की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में वृद्धावस्था में आप न्यूनाधिक रूप से रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानियों की अनुभूति कर सकती है। अतः यदि युवावस्था से ही आप खाद्य पदार्थो का सीमित उपयोग करें तो ऐसी सम्स्याओं से आप सुरक्षित हो सकती है तथा आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा मंगल भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक तीक्ष्ण बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता होगी परन्तु इसका पूर्ण उपयोग करने में कई बार आप अवसर चूक जाएंगे। जिससे लाभ में कमी आएगी लेकिन कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि अल्प ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान भौतिक शास्त्र एवं तकनीकी क्षेत्र में आपका विशेष आकर्षण होगा तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करने में तत्पर होंगे। आप इस क्षेत्र में किसी विशिष्ट सिद्धांत का प्रतिपादन भी कर सकते है जिससे आपकी विद्वता एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में मंगल की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि कम ही होगी परन्तु मनोरंजन के लिए आप ऐसे सम्बंधों को स्थापित करेंगे। लेकिन प्रेम-प्रसंगों में आपको नैतिकता, मर्यादा एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण रखना चाहिए अन्यथा इससे आपको अनावश्यक परेशानियां उत्पन्न हो सकती है। अतः ऐसी स्थिति की उपेक्षा करने का प्रयत्न करें।

संतति भाव में मंगल की स्थिति के प्रभाव से आपको संतति प्राप्ति में विलम्ब एवं बाधाओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु संतति अवश्य होगी। आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता-पिता के प्रति यद्यपि उनके मन में मान सम्मान की भावना होगी परन्तु वे स्वतन्त्र एवं स्वछन्द प्रवृति के होंगे तथा अपनी इच्छा से ही अधिकांश कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें माता-पिता की सलाह अल्प मात्रा में ही लेंगे। वे यदा-कदा आज्ञा का भी उल्लंधन कर सकते है लेकिन इसकी आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने देने चाहिए इससे उनकी योग्यता में वृद्धि होगी तथा परस्पर विश्वास एवं सदभाव भी बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपको बच्चों से विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए तथा यथोचित मात्रा में धन संग्रह करके रखना चाहिए जिससे अनावश्यक परेशानियों से सुरक्षित रहेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उच्च स्तर पर व्यवस्था करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार से कमी नहीं होने देंगे। इसके अतिक्ति बच्चों का तेजस्वी स्वभाव होगा जिससे यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से वे विवाद आदि भी कर सकते है। इससे आपको अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा लेकिन अपने सद्व्यवहार से आप स्थिति को संभालने में समर्थ होंगे।

PRIYANKA

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी परन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समस्याओं के समाधान में किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः आपको सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए तथा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। नीचस्थ चन्द्र के प्रभाव से वैदिक एवं धर्मशास्त्रों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं भौतिक शास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं इस क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप कोई शोध कार्य भी आप सम्पन्न कर सकती हैं। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग एक विदुषी के रूप में आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे।

पंचमभाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम प्रसंगो में आप की काफी रूचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाने का आप इसे साधन समझेंगे। इसमें मर्यादा एवं आदर्श की भावना भी कम ही होगी जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त भावात्मक लगाव की अपेक्षा शारीरिक लगाव अधिक होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, योग्य एवं तेजस्वी प्रवृति के होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे वे माता-पिता की आज्ञा का पालन करेंगे परंतु रदा कदा अपनी मर्जी के कार्य भी करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता की सलाह लेंगे वे व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आपको उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए तथा उन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालना चालिए। इससे आपके सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति काफी परिश्रम एवं पराक्रम से ही सन्तोषजनक उन्नति करने में समर्थ होगे। यद्यपि आप उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगी लेकिन वे इसका पूर्ण लाभ उठाने में समर्थ होंगी परन्तु वे व्यावहारिक प्रवृति के होंगे तथा अपनी चतुराई से आजीविका अर्जन में समर्थ रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृति होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है लेकिन सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से रक्त सम्बन्धियों या मित्रों से आपको यदा कदा विरोध या शत्रुता का सामना करना पड़ेगा तथा वे अकारण ही आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आपकी खुशहाली एवं वैभवता को देखकर लोग ईर्ष्यालु होंगे आपके शत्रु आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहेंगे तथा आपकी सामाजिक छवि को भी धूमिल करना चाहेंगे। लेकिन आप अपनी चतुराई बुद्धिमता, विनम्रता एवं कूटनीति से शत्रुवर्ग को पराजित तथा उत्पन्न समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में सफल होंगे।

आपके सेवक ईमानदारी तथा निष्ठापूर्वक आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे साथ ही आपके लिए वे आज्ञाकारी तथा विश्वासपात्र भी रहेंगे परन्तु यदि उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो वे चोरी आदि भी कर सकते है अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही कई बार वे आपके गुप्त रहस्यों को भी वे अपनी बातूनी प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों से कह सकते है। इस प्रकार हो सकता है कि आप समय समय पर नौकरों का परिवर्तन करते रहें।

आप अपने व्यय पर नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे क्योंकि आप धन संग्रह के प्रति विशेष रूचि रखेंगे। यही कारण है कि आप सबसे मित्रतापूर्ण संबंध रखने में प्रायः असफल से रहेंगे। साथ ही यदा कदा अनावश्यक पूंजी निवेश के कारण ऋण आदि की भी स्थिति आ सकती है तथा ऋण दाता द्वारा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके मामा मामी प्रवृत्ति से अच्छे व्यक्ति होंगे तथा आपके साथ उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। यद्यपि मामी से आपको पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु मामा से आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप जीवन में फौजदारी मुकद्दमे से सम्बन्धित रहेंगे तथा इन पर आपका काफी समय एवं धन बर्बाद होगा परन्तु अपनी बुद्धिमता तथा अन्य गुप्त सूत्रों के द्वारा अन्त में विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम स्वास्थ्य के लिए दैनिक खान पान में सावधानी रखें तथा मानसिक चिन्ताओं से भी दूर ही रहें अन्यथा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त कर सकते है।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विदुषी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा शत्रुता के भाव की सामान्यतया उपेक्षा ही करेंगी। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक समय व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी परन्तु आपके शत्रु एवं विरोधी लोग इसमें व्यवधान उत्पन्न करेंगे तथा आपके सम्मान में न्यूनता एवं सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। अतः उनकी ऐसी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए कोर्ट में मुकद्दमे दायर कर सकती हैं। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रु वर्ग का सामना करेंगी तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगी।

इस कार्य में आपकी बुद्धिमता तथा सहमित्रों का मंडल भी सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा परिवार या बन्धु वर्ग से भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको ही सफलता प्राप्त होगी। आप नैतिकता का अनुपालन करेंगी अतः शत्रु पक्ष का दमन करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए सर्वत्र यत्नशील रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी रहेगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा। जीवन में ऐसे अवसर अल्प मात्रा में ही आएंगे जबकि आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्ति पा जाएंगी। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि मामा से जीवन में आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता आएगी तथा वे आपको अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा जीवन में आपको मुकद्दमों आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंत में विजय आपको ही होगी। इस प्रकार आप समाज में एक आदरणीय तथा सम्मानीय समझी जाएंगी तथा अपने अच्छे संबंधों से अन्य जनों से उचित सहयोग एवं आदर प्राप्त करेंगी।

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है तथा उसमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके स्वभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्य कलापों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा अपने साहसिक कार्यो से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। वे अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी जिससे परिवार एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी तथा शरीर के अन्य अंग पुष्टता से युक्त रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी आकर्षण आएगा। पाश्चात्य समाज एवं संस्कृति के प्रति भी उनका रूझान रहेगा। भौतिकता के प्रति भी उनका आकर्षण होगा एवं सुंदर तथा कलात्मक वस्तुएं प्रिय होंगी तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में सिंह राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा इसमें अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा या आप स्वयं भी प्रेम विवाह कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण एवं प्रेम की भावना भी होगी आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा एक दूसरे के सहयोग से सांसारिक कार्यों को पूर्ण करेंगे। इससे आपस में प्रेम विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय दहेज के रूप में आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे से सम्मान एवं सहयोग अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा की भावना होगी तथा उनका सुख दुख में पूरा ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उन्हें वांछित सम्मान देंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया मकर राशि की सप्तम भाव में स्थिति के प्रभाव से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है। साथ ही वह सुशील सहिष्णु एवं बुद्धिमान होता है तथा अपने कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति चंचल तथा सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यो को शांत मन से सम्पन्न करेंगे वह एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। कला एवं संगीत के प्रति भी उनकी रूचि होगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव रहेगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे जिससे आपके सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पति गौर वर्ण की आकर्षक एवं सुंदर व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। उनकी शारीरिक संरचना भी उत्तम रहेगी तथा पुष्टता एवं सुडौलता से उनके सौन्दर्य की अभिवृद्धि होगी। जलीय राशि मकर के प्रभाव से उनमें आयु के साथ साथ स्थूलता भी आ सकती है। साथ ही कला एवं सुंदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा महिला संबंधियों का इसमें विशेष योगदान रहेगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे के मनोभावों का पूर्ण आदर करेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आपसी सहमति तथा सहयोग से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा परस्पर विश्वास का भाव भी बना रहेगा।

आपका विवाह सामान्य परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उनकी स्थिति साधारण रहेगी। सास ससुर से आपके सामान्य संबंध अच्छे रहेंगे तथाा वे भी आपको यथोचित स्नेह तथा नैतिक सहयोग प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति की पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। साले एवं सालियों को भी वह अपने मृदु व्यवहार एवं वाणी से प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा वे भी उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी एवं माता या अन्य मातृपक्ष के साथ साझेदारी से वांछित लाभ एवं उन्नति होगी तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति अच्छी रहेगी तथा आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां सत्य होंगी अध्यात्म, ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन व्यवहारिक के ज्ञान की अपेक्षा अंतर्प्रज्ञा शक्ति ही अधिक सहायक सिद्ध होगी। आपके अधिकाशं कार्य अध्यात्म के अनुसार ही सम्पन्न होंगे अतः कई बार आप वास्तविकता से दूर हो जाएंगे। आपको न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी परन्तु बाद में आपको छोड़नी पड़ेगी जिससे आपको काफी मानसिक कष्ट होगा तथा इसके कारण वातावरण अशान्त होगा। साथ ही पुनः जायदाद जोड़ने के लिए आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। बन्धु एवं सम्बन्धियों से भी जायदाद के बारे में विवाद रहेगा जिससे परस्पर बन्धुत्व के भाव की अपेक्षा वैमनस्य का भाव ही उत्पन्न होगा ।

शादी के समय आपको किंचित धन आभूषण या अन्य चीजें दहेज के रूप में प्राप्त हो सकती हैं परन्तु आपके ससुराल वाले बार बार इस दहेज के बारे में आपको याद दिलाएंगे जिससे आपकी आधी खुशी उनके इस व्यवहार से खत्म हो जाएगी। बीमे के रूप में आपको विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होगी यह केवल जितनी हानि या नुकसान हुआ है उसी के लिए पर्याप्त होगी। आपके जीवन में कोई विशेष दुर्घटना या चोरी आदि का योग नहीं है यदि ये भी घटित भी होती है तो इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म, ज्यौतिष अथवा तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगी क्योंकि आप एक व्यावहारिक महिला तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको उचित नहीं लगता तथा अपने पराक्रम एवं कार्य पर आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। पैतृक सम्पत्ति की आपको प्राप्ति होगी लेकिन यह अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु इसका आप पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि आपके पास पहले ही प्रचुर मात्रा में धनऐश्वर्य रहेगा तथा आवश्यक सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगी। आप एक सिद्धांतवादी महिला होगी तथा दाम्पत्य जीवन भी अच्छा रहेगा।

जीवन में आपकी कुंडली के अनुसार आपके घर में चोरी आदि की भी संभावना रहेगी लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी क्योंकि पुलिस या अन्य सूत्रों से आपको अपना सामान सही सलामत वापस मिल जाएगा। बीमा आदि करने से भी आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः इस क्षेत्र में अनावश्यक पूंजी निवेश न करें तथा अन्यत्र उसका सदुपयोग करें।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा यत्नपूर्वक दुर्घटना आदि की उपेक्षा करनी चाहिए तथा इससे बचने के लिए आवश्यक रूप से तैयार रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सम्पूर्ण सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में नवम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आदर्श एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में काफी श्रद्धा रहेगी। आप दिखावे में विश्वास नहीं करते तथा जो कुछ भी करेंगे हृदय से सच्ची भावना से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मनुष्य मात्र की भलाई के लिए भी कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। दैनिक जीवन में आप पूजा तथा योग एवं धर्मानिषठ कार्य नित्य करते रहेंगे। साथ ही मानसिक एवं आत्मिक शान्ति के लिए तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे। धार्मिक उत्सवों के प्रति आपकी आदर की भावना रहेगी तथा अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मो का भी पूर्ण सम्मान करेंगे साथ ही पारिवारिक परम्परा, रीति रिवाजों के अनुसार धर्म का अनुपालन करेंगे।

आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगे तथा जीवन में विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे। साथ ही भाग्य भी आपका प्रबल रहेगा। योग ध्यान या आध्यात्म संबधी महत्वपूर्ण ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त ज्योतिष आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से सही भविष्यवाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे।

आप धार्मिक तथा व्यावसायिक उदद्ेश्य की पूति के लिए जीवन में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न करेंगे तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा साथ ही सामाजिक जनों के परोपकार संबधी कार्य भी सम्पन्न करेंगे लेकिन कभी कभी स्वार्थ वश कंजूसी का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन यह अल्प मात्रा में होगा। आप एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा आपके अनुयायी या सहायक भी रहेंगे पौत्रों से आपको पूर्ण सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के प्रभाव से इस जीवन को ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी तथा इसके प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी। साथ ही ध्यान या समाधि आदि में भी रूचिशील रहेंगी तथा अन्तदृष्टि भी प्रबल रहेंगी। ज्योतिष या तंत्र मंत्र के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा इसका न्यूनाधिक ज्ञान भी रहेगा। आप नियमित रूप से पूजा अर्चना करेंगी तथा आध्यात्मिक विषयों का पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा इन पर धारा प्रवाह भाषण करने में भी समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी धार्मिक संस्था से सम्बन्धित हो सकती है तथा उसमें कोई उच्च या सम्मान्नीय पद भी प्राप्त कर सकती हैं ।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगी तथा इससे समाज में इच्छित मान सम्मान एवं ख्याति अर्जित करेंगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही परिश्रम एवं लगन के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी तथा धार्मिक विषयों का व्यक्तिगत रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगी। दैनिक पूजन सम्पन्न करने से आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति विकसित होगी तथा आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां सही सिद्ध होंगी।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ ऐश्वर्य एवं ख्याति प्राप्त होगी। साथ ही आप किसी दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकती हैं। आप परोपकार तथा सामाजिक जनों के हित कार्यो को करने में भी हमेशा तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सुख ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक सन्तों के प्रति श्रद्धालु , मन्दिर, तालाब आदि परोपकार के कार्य करने वाली तथा आर्थिक रूप से समृद्ध रहकर अपना जीवन यापन करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

JITENDER SINGH

आपकी जन्म कुंडली में जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। वृश्चिक राशि जलतत्व युक्त राशि है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया से युक्त होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी साथ ही कार्यक्षेत्र में आप समय समय पर परिवर्तन करने के भी इच्छुक रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा जिससे आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र औषधि विज्ञान, डाक्टर, इंजीनियर, होटल प्रबंधक, या कर्मचारी, पुलिस सी आई डी, सेना, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, शस्त्र निर्माता तथा राजनीति का क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में आजीविका प्रारंभ करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार सुवर्ण आदि धातु कार्य विद्युत उपकरणों का क्रय विक्रय या निर्माण औषधि क्रय विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक पदार्थ या होटल का स्वामित्व से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा इस में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता के लिए उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार का आरंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे साथ ही समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य हो सकते है। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य वे आदरणीय होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चस्तर पर शिक्षा का यत्नपूर्वक प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता रहेगी। आप में आज्ञाकारिता का भाव भी विद्यमान होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे की

सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में दशमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही केतु भी दशम भाव में ही स्थित है। मेष राशि अग्नितत्व एवं केतु वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के भी इच्छुक होंगी। इस परिवर्तन से आपको यथोचित लाभ भी अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

दशमभावस्थ केतु के प्रभाव से आपके लिए उचित आजीविका क्षेत्र वायुसेना, हवाई सेवाएं, विद्युत इंजीनियरी, रासायनिक क्षेत्र, राजनीति, होटल प्रबंधन या कर्मचारी तथा अन्य कार्य उपयुक्त रहेंगे तथा इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित लाभ एवं उन्नति होगी तथा अपने भविष्य को सुरक्षित करने में समर्थ होंगी। अतः यदि आप कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति सफलता एवं सम्मान प्राप्त करना चाहती है तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही आजीविका का चुनाव करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे का कार्य, खनिज पदार्थ, विद्युत उपकरण, वाहन संबंधी व्यापार खेती या जायदाद संबंधी कार्य, ट्रेवल एजेंसी, खेती बागवानी एवं श्रमसाध्य व्यापार से वांछित लाभ एवं उन्नति अर्जित करने में समर्थ होंगी। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी तथा भविष्य के लिए भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे जिससे आजीवन आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी तथा आपके कार्यक्षेत्र में भी विस्तार होगा।

दशमभाव में मेष राशि में केतु की स्थिति के प्रभाव से जीवन में आप वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही आपको सामाजिक यश की भी प्राप्ति होगी। आप एक अधिकार प्राप्त महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। नैसर्गिक पापी ग्रह केतु के प्रभाव से आप को उपरोक्त मान सम्मान प्रतिष्ठा एवं यश की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे अनावश्यक व्यवधानों तथा समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता एक तेजस्वी पराक्रमी एवं मेधावी व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे लेकिन उनमें क्रोध के भाव की भी अधिकता होगी। आपके प्रति वे पूर्ण वात्सल्य भाव से युक्त होंगे तथा शिक्षा दीक्षा का उचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनके प्रभाव से आप यथोचित कार्यक्षेत्र प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आप भी अपने कार्यकलापों से उनकी प्रतिष्ठा भी वृद्धि करेंगी। लेकिन आपके परस्पर संबंधों में मधुरता कम ही रहेगी तथा वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेदों की प्रबलता के कारण इसमें तनाव उत्पन्न होंगे। अतः आप दोनों को चाहिए कि ऐसे अवसरों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में एकादश भाव में धनु राशि स्थित है जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप पराक्रमी स्वस्थ्य तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा जीवन में परिश्रम एवं योग्यता से इच्छाओं तथा आकाक्षांओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप जीवन में समस्त सुख साधनों से युक्त होंगे तथा निरन्तर रूप से आय एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। आप शिक्षा, बैंक, ब्याज या प्रशासनिक कार्यो से इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे या तो आप इन क्षेत्रों में कार्यरत होंगे अथवा आपको इनसे संबंधित विभागों एवं लोगों से समय समय पर इच्छित लाभ प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इनके द्वारा आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

आपका बड़े भाई से पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे आपको इच्छित सुख सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा वे आपका पुत्रवत् पालन करेंगे। जीवन में आपको वे आर्थिक रूप से निर्भर बनाएंगे तथा समय समय पर आपका मार्ग निर्देशन भी करते रहेंगे। आप भी उनका पितृवत मान सम्मान करेंगे। आपको विद्वान मित्रों की हमेशा इच्छा रहेगी जो जीवन दर्शन के विषय में आपका मार्ग दर्शन कर सकें अतः विद्वान एवं शिक्षित लोग ही अधिक रूप से आपके मित्र होंगे। साथ ही अवस्था के साथ साथ आप युवावस्था के लोगों को उपदेश भी प्रदान करेंगे। आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र एवं समाज में प्रसिद्ध तथा आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको अपना मित्र समझेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा तथा समस्त सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे।

PRIYANKA

आपकी जन्म कुंडली में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न प्रकार की सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी तथा महत्वाकांक्षा के भाव की भी प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। जीवन में अपनी इच्छाओं तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति परिश्रम एवं पराक्रम से करने में सफल रहेंगी। आपका धनार्जन उत्तम रहेगा तथा आय स्रोतों की भी अधिकता रहेगी। यद्यपि आपका धनार्जन उत्तम रहेगा लेकिन बचत की प्रवृत्ति भी आप में रहेगी। अतः आर्थिक रूप से आपको कभी कोई परेशानी नहीं होगी। आपको ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से इच्छित लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी उनको इच्छित मान सम्मान प्रदान करती रहेंगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाने की इच्छुक रहेंगी तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक कार्य कलापों से आप उनका मनोंरजन करने में तत्पर रहेंगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों से अधिक होगा तथा इन्हीं क्षेत्रों से जीवन में आपको

इच्छित धनार्जन एवं लाभ भी होगा। इस प्रकार मित्रों से युक्त होकर प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में आदरणीया तथा प्रतिष्ठित महिला समझी जाएंगी। अन्य सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करना आप अपना परमप्रिय कर्तव्य समझेंगी तथा इसी परिपेक्ष्य में किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी होने की संभावना रहेगी। आप कभी कभी स्वयं ही एकाकीपन की अनुभूति करेंगी लेकिन आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख संसाधनों से तथा अन्य वैभव से युक्त रहकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

JITENDER SINGH

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम के फलस्वरूप किसी भी माध्यम के द्वारा इच्छित उन्नति सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी पुरूष होंगे तथा आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र की उन्नति के लिए खतरे उठाने में भी नहीं झिझकेंगे जिससे आपको अन्ततः लाभ ही होगा। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी ही रहेगी तथा आर्थिक सुदृढ़ता के कारण आप उन्मुक्त भाव से जीवन में आनन्द, सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए व्ययशील रहेंगे।

आप पारिवारिक जनों के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं रहन सहन, खान पान तथा अन्यत्र उच्च स्तर बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे साथ ही अपने सामाजिक स्तर की वृद्धि करने के लिए भी आपको काफी व्यय करना पड़ेगा। चूंकि आपके पास धन एवं सम्मान की कमी नहीं रहेंगी अतः आप उपरोक्त क्षेत्र में आनन्द प्राप्त करेंगे। साथ ही अपरिचित लोगों तथा सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं अवसरनुसार उन्हें उचित आर्थिक सहयोग देंगे जिससे लोग आपकी दानशीलता से प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपनी संगठन शक्ति से जीवन में इच्छित सफलता अर्जित करेंगे।

आप व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित दूर समीप की यात्राएं करेंगे। इसी संदर्भ में आप विदेश की यात्रा भी करेंगे। यद्यपि इसमें व्यय अधिक परन्तु भविष्य में आपको उचित लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

PRIYANKA

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत का अनुपालन करने वाली महिला होंगी तथा जीवन में इसका अनुकरण करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आपकी सतर्कता बनी रहेगी। साथ ही ईमानदार होगी अतः बेईमानी करने वालों से आपको घृणा रहेगी। आपका धनार्जन स्वयं की योग्यता तथा परिश्रम से ही अर्जित होगा। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भाग्यशाली महिला होंगी।

जीवन में आपको आर्थिक कष्ट की अनुभूति अल्प मात्रा में ही होगी वास्तव में आपकी आवश्यकताएं सीधी सादी एवं सीमित मात्रा में रहेंगी तथा भौतिकता पर आपका विशेष आकर्षण नहीं रहेगा। इससे आपका व्यय सीमित तथा नियंत्रित रहेगा। आप शीघ्र लाभ अर्जित की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ की अधिक इच्छुक रहेंगी। धन संग्रह के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा व्यय के साथ बचत भी अवश्य करेंगी। इस प्रकार आपके समस्त पारिवारिक तथा अन्य

व्यय आवश्यकता के अनुसार ही रहेंगे एवं इनमें अनावश्यक व्यय नहीं होगा जिससे आर्थिक सुदृढ़ता प्रायः बनी रहेगी साथ ही अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य के लिए कल्याणकारी योजनाओं पर भी व्यय करेंगी। इस प्रकार आप अपना धन बड़ी बड़ी कंपनियों पर लगाएंगी जहां से उचित लाभ प्राप्त होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी जिनसे प्रारंभ में व्यय होकर भविष्य में लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके साथ ही आपकी विदेश संबंधी कोई लाभदायक एवं उन्नतिकारक यात्रा भी सम्पन्न होगी। इस प्रकार आप धन-वैभव से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगी।

दशा विश्लेषण

JITENDER SINGH

महादशा :- राहु
(24/12/2009 - 24/12/2027)

राहु की महादशा 24/12/2009 को आरम्भ और 24/12/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष। आपकी जन्मकण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपके जीवनचर्या में उन्नति, भाई-बहनों तथा सम्बन्धियों से लाभ, छोटी यात्रा तथा शक्ति में वृद्धि होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा इच्छाओं की पूर्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सुखी तथा आशावादी होंगे। राहु के कारण आपको हर तरह की भोजन के मामले में हर तरह की अतिशयता से बचना चाहिए। गरिष्ठ भोजन से बचें। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन क्रिया में गड़बड़ी, चर्मरोग, पित्त से सम्बन्धित रोग, बुखार, कान तथा निचली भुजा में कष्ट हो सकता है। सावधानी बरतने से इनमें से अधिकांश बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपके पास धन होगा, आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे और निवेश तथा सट्टा लाभदायक होगा। इस अवधि में आपको सम्पत्ति, समृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा। आपकी अनेक इच्छाएं आकांक्षाएं पूरी हो सकती हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेखा, कम्प्यूटर, खेल, पराविज्ञान तथा जलसेवा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, एण्टीबायोटिक दवाओं, चमड़े के सामान, लोहा और इस्पात आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को विरोधियों पर विजय, कार्यस्थान में अनुकूल स्थिति, लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके सहकर्मी तथा अधीनस्थ कर्मचारी आपके सहयोगी होंगे। आपका स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आर्थिक समृद्धि तथा महत्वाकांक्षा की पूर्ति और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आवास में परिवर्तन सम्भव है। जमीन-जायदाद के मामलों में हानि कम करने के लिए सावधानी बरतना चाहिए। आप वाहन खरीद सकते हैं। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु लाभदायक यात्रा होगी। शुक्र तथा शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने महत्वाकांक्षा की पूर्ति करेंगे। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। अर्थशास्त्र, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप पराविज्ञान, खेल, दर्शनशास्त्र आदि में रूचि रखते हैं और शिक्षा से अलग गतिविधियों में आगे बढ़ेगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे आपकी खुशी के साधन होंगे। आपके जीवनसाथी को सुख, निवेश तथा सट्टे में सफलता, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी अचानक छोटी यात्रा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि आपके पिता को संबंधियों से लाभ मिलेगा और यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, सम्पत्ति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सम्पत्ति-समृद्धि की प्राप्ति और इच्छाओं की पूर्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपको हर प्रकार का लाभ और प्रतिष्ठा मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्यति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्नति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शिक्षा उत्तम होगा और सट्टे में लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शादी, साझेदारों से लाभ तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, संबंधियों से सहायता तथा जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

PRIYANKA

महादशा :- गुरु
(13/03/2016 - 13/03/2032)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 13/03/2016 को आरम्भ और 13/03/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है और मातृभूमि, माता, निजी मामले, गुप्त जीवन, खेती, बगान पैतृक सम्पत्ति, शिक्षा-वृत्ति, जल, तालाब, दूध, नदी और झील के द्योतक इस भाव को बली कर रहा है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है। चौथे भाव में स्थित इस ग्रह की आपकी जन्मकुण्डली के आठवें, दसवें और बारहवें भावों पर दृष्टि है और यह इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए अनुकूल, सुख तथा समृद्धिदायक होगी।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु चतुर्थ भाव को बली कर रहा है। आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा और कोई गम्भीर बीमारी या कष्ट नहीं होगा। आप अपना कार्य सामान्य ढंग से पूरा करेंगें।

धन-सम्पत्ति :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (बारहवें भाव के अतिरिक्त) आठवें और 'मंगलीय कार्य' तथा व्यवसाय के दसवें भाव पर है। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति में वृद्धि करनें के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। आप नयी गाड़ियाँ तथा नया मकान खरीद सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

व्यवसाय :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (12वें भाव के अतिरिक्त) 8वें तथा व्यवसाय, दीर्घायु और 'सुखकार्य' के 10वें भाव पर है, अतः आप अपने व्यवसाय में सफल होंगे, कार्यक्षेत्र में आगे रहेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, आपको अपनी व्यावसायिक वृत्ति में प्रगति के अच्छे अवसर मिलेंगे। आपके कार्य की आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चतुर्थ भाव अर्थात माता, जन्म और 'सुखस्थान' के भाव में स्थित गुरु के कारण इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण रहेगा। परिवार में समरसता लाने में आपकी माता की भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

चतुर्थ भाव, जो शिक्षा का भाव भी है, में स्थित गुरु के कारण आपकी शिक्षा उत्तम होगी और आप सफल होंगे।

दशा विश्लेषण

JITENDER SINGH

महादशा :- गुरु
(24/12/2027 - 24/12/2043)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 24/12/2027 को आरम्भ होकर 24/12/2043 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु अष्टम् भाव में है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जो अष्टम में स्थित होकर द्वादश, द्वितीय तथा चतुर्थ भाव को देखता है तथा इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है।

स्वास्थ्य :

आप स्वस्थ और दीर्घायु होंगे। इस दशा काल में कोई बड़ी दुर्घटना होने की संभावना नहीं है तथा आप स्वस्थ और प्रसन्नचित होकर अपना कार्य पूरा करने के योग्य रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की द्वितीय भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आप अपनी चल तथा अचल सम्पत्ति में बढ़ोत्तरी करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करेंगे।

व्यवसाय :

आप अपने व्यवसाय में प्रसन्नतापूर्वक सुव्यवस्थित हो जाएंगे तथा नौकरी या व्यवसाय में आप पर्याप्त पैसा, जमीन, वाहन, अधिकार और पद प्राप्त करेंगे।

आप कभी-कभी कुछ गलत काम कर सकते हैं जिसके लिए दंडित भी हो सकते हैं तथा घाटा उठाना पड़ सकता है।

पारिवारिक जीवन :

अष्टम भाव से गुरु की दृष्टि द्वादश अर्थात् शयन सुख के भाव के अतिरिक्त द्वितीय अर्थात् परिवार या कुटुम्ब भाव तथा चतुर्थ अर्थात् सुख भाव पर होने के फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन खुशहाल और सुख सम्पन्न होगा। आपके जीवन साथी परिवार का संचालन करने और शान्ति बनाए रखने में मार्गदर्शन करेंगे। आपके पिताजी को कभी कठिनाइयों से गुजरना पड़ सकता है तथा स्थान परिवर्तन के संकेत हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपका झुकाव शैक्षणिक गतिविधियों की तरफ होने से आप अपनी पढ़ाई जारी रखने की कोशिश करेंगे और सफल होंगे।

PRIYANKA

महादशा :- शनि
(13/03/2032 - 13/03/2051)

महादशा शनि की अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 13/03/2032 को आरम्भ और 13/03/2051 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह स्वाभाव से एक अशुभ ग्रह है। यह बाधा-ग्रह के रूप में जाना जाता है और इसके कारण परिश्रम का फल प्राप्त होने में विलम्ब होता है हालाँकि यह फल से वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य फल की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में अष्टम, द्वितीय तथा पंचम भाव पर दृष्टि है और यह उनके कार्य को प्रभावित करता है। अष्टम भाव, जिसमें यह स्थित है, दीर्घायु, विरासत, पैतृक सम्पत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, असन्तोष, पराजय, हानि, बाधा ओर चोरी का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शनि अष्टम भाव को बल प्रदान कर रहा है। दीर्घायु का कारक होने के कारण यह लम्बी आयु तथा प्रसन्नता देता है। विदेश में स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

धन-सम्पत्ति :

अष्टम भाव में शनि की स्थिति के कारण आपके जमीन, बाहन, शक्ति तथा पद की प्राप्ति होगी। यह चल-अचल सम्पत्ति की वृद्धि में आपकी सहायता करेगा और अनेक उत्तरदायित्व का भार भी वहन करना होगा। आप अपने मार्ग में आनेवाली विभिन्न कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करते हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन करेंगे।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करेंगे। व्यावसायिक जीवन में अनेक गम्भीर समस्याएं आ सकती हैं। पैतृक सम्पत्ति तथा व्यापार में भी बाधाओं और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

पारिवारिक जीवन :

व्यावसायिक तथा व्यापारिक जीवन की तरह ही आपका पारिवारिक जीवन भी दुर्भाग्य, बाधाओं तथा समस्याओं से घिरा है। आपको इन बाधाओं का सामना करना है। आप अपने घर से दूर ओर दूसरी जाति की औरतों की ओर आकृष्ट हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

व्यापारिक तथा पारिवारिक जीवन की तरह ही आपकी शिक्षा के क्षेत्र में भी बाधाएं आएंगी।

दशा विश्लेषण

JITENDER SINGH

महादशा :- शनि
(24/12/2043 - 24/12/2062)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 24/12/2043 को आरम्भ और 24/12/2062 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 12वें भाव में स्थित है। यह एक खतरनाक ग्रह है। यह लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है। जतक के धैर्य की परीक्षा लेना इसकी प्रवृत्ति होती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 12वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि-द्वितीय, षष्ठम तथा नवम भाव पर है और यह उनके कार्यो को प्रभावित करता है। 12वां भाव, जिसमें यह ग्रह स्थित है, क्षति और बाधा, फिजूलखर्च, उदासी और चाकरी, दान, पुण्य, परिवार से अलगाव, कंजूसी और दुर्भाग्य, कार वास, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, अपकीर्ति, अपयश, बायीं आँख, शयन-सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

12वें भाव दुर्भाग्य के भाव में स्थित शनि के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

धन-सम्पत्ति :

12वें भाव में स्थित महादशा के स्वामी शनि के कारण आपको इस दशा के दौरान बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु, चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर भी मिलेंगे। आप विदेश में अपना भाग्य आजमा सकते हैं, किन्तु आपको अनेक बाधाओं के कारण सफलता नहीं मिलेगी।

व्यवसाय :

आप भ्रमणशील हैं और आपके जीवन में अनेक परिवर्तन आएंगे इसलिए आपके व्यवसाय में अनेक उतार-चढाव आएंगे और आपकी हानि होगी। दिमागी स्तर पर आप सतर्क नहीं रहेंगे और सुस्त दिमाग होने के कारण आपके विभिन्न कार्यों में धन की हानि होगी। आप धार्मिक कार्यों पर अत्यधिक धन खर्च करेंगे। आप कृषि कार्य भी कर सकते हैं।

पारिवारिक कार्य :

आपके पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। असन्तोष तथा बिखराव के कारण आपका पारिवारिक जीवन असन्तुलित हो सकता है जिससे आपका जीवन कष्टमय हो जाएगा। आपकी पत्नी आपकी सहयोगी हो सकती हैं, पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जा सकती है कि आपको परिवार से दूर जाना पड़े जिसके फलस्वरूप आप परिवार से अलग भी हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा की दृष्टि से यह दशा बहुत अनुकूल नहीं है।

PRIYANKA

महादशा :- बुध
(13/03/2051 - 13/03/2068)

बुध की महादशा 13/03/2051 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 13/03/2068 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्यशित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान-विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हें। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय-व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा। आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन भी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध-परियोजनाएं आरम्म कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान-पुण्य तथा शुभ कार्यों पर व्यय करेंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2025

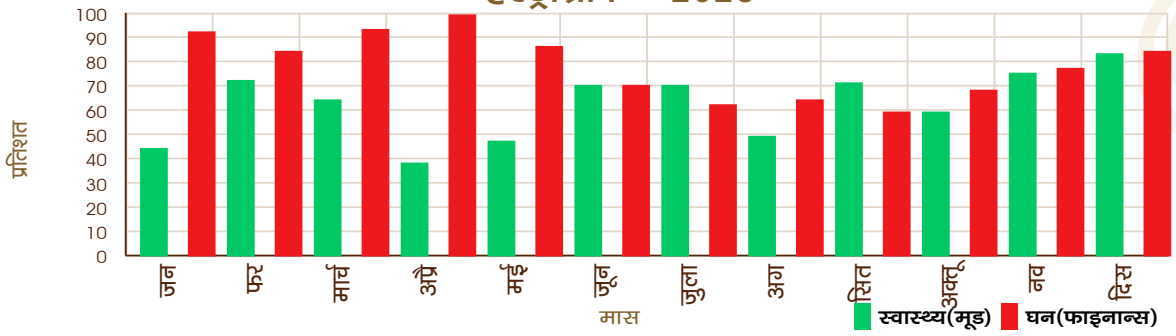

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2025

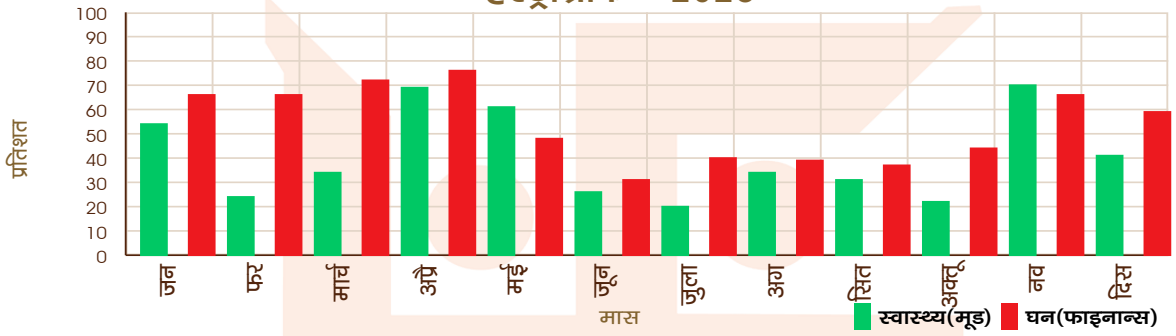

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2026

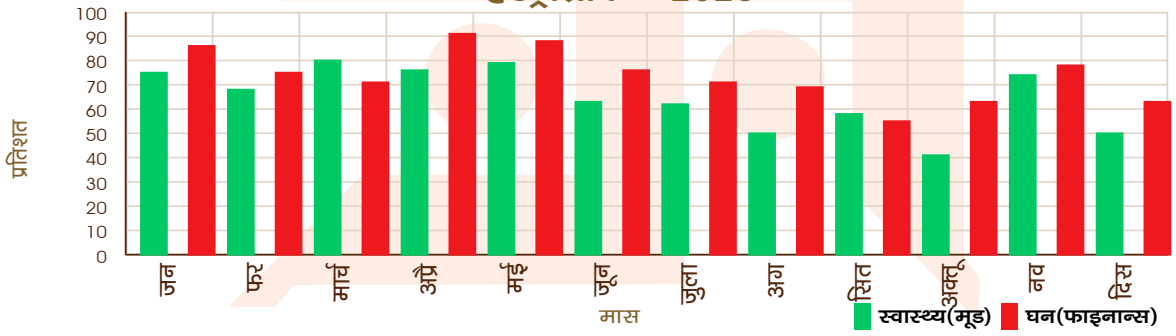

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2026

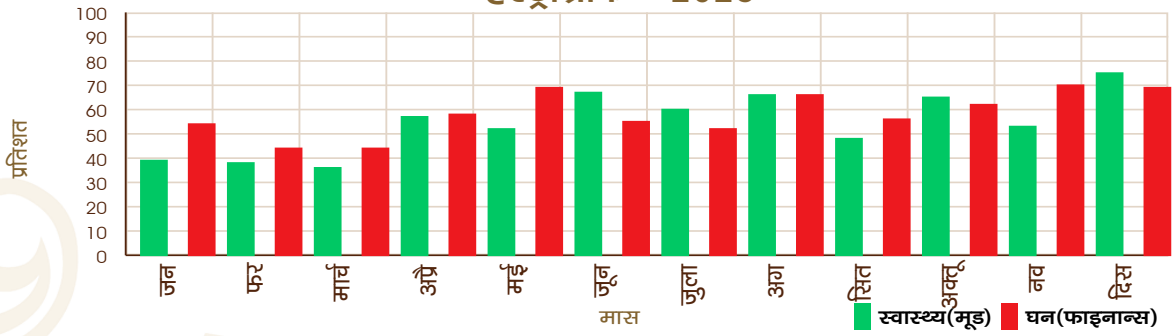

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2027

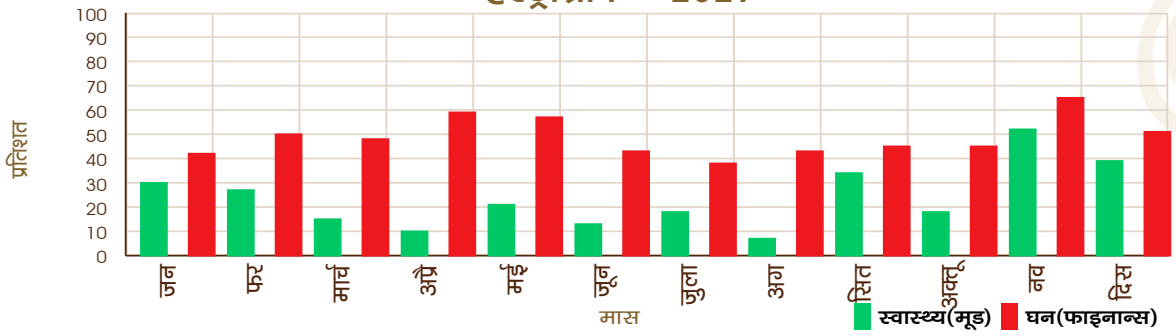

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2027

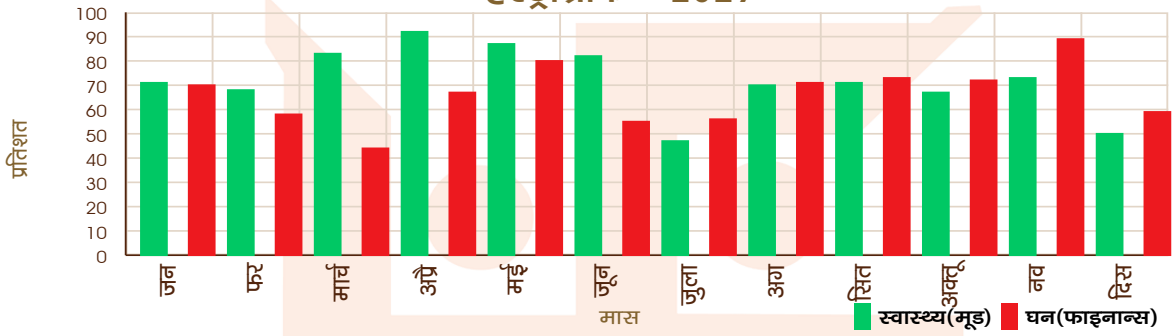

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2028

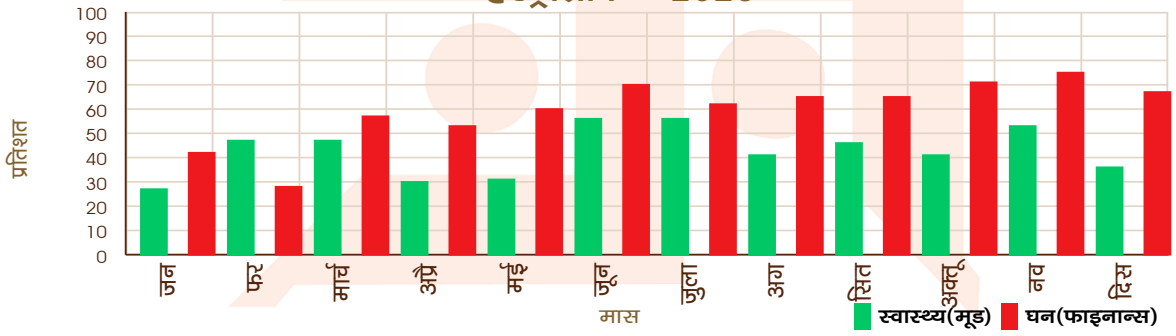

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2028

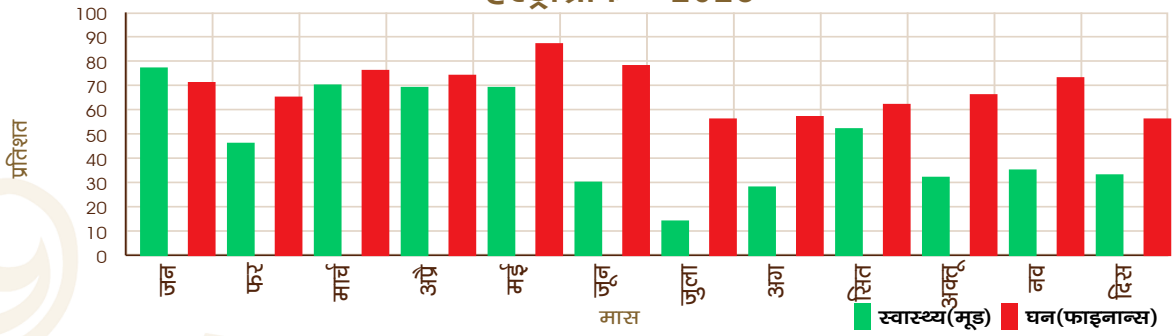

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2029

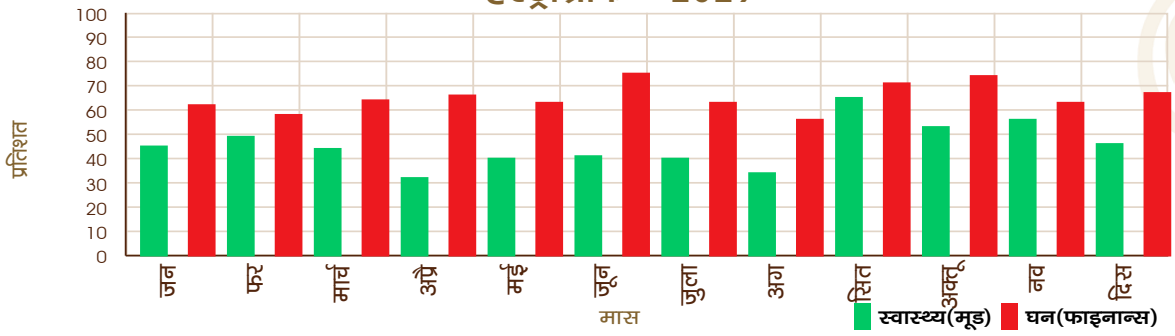

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2029

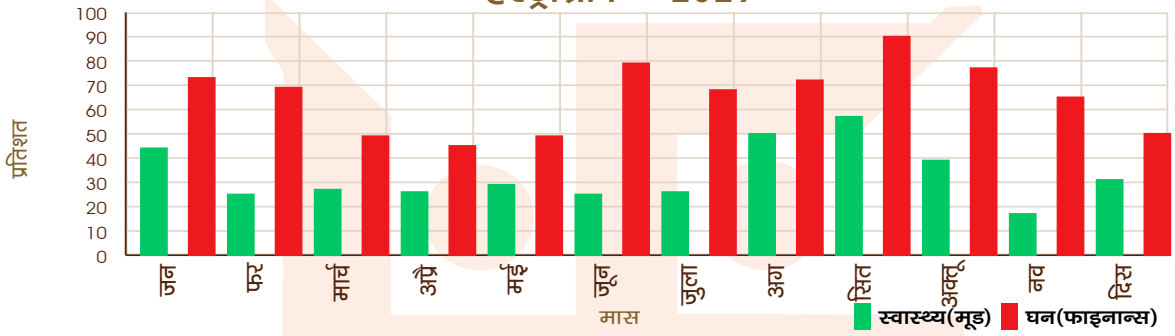

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2030

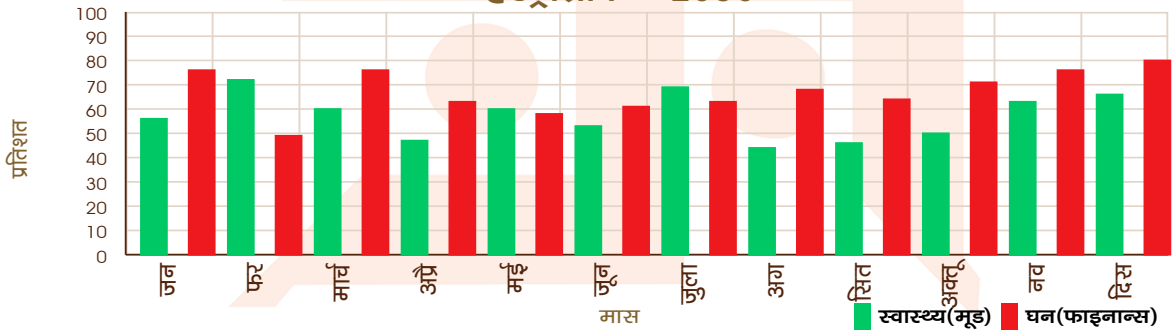

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2030

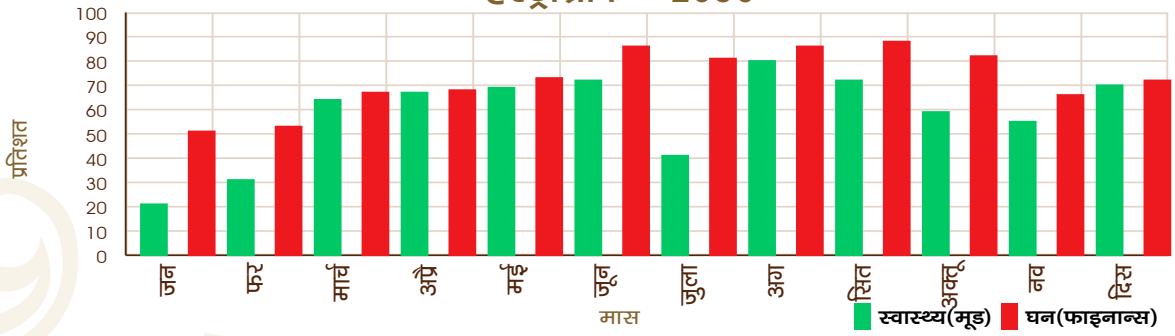

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2031

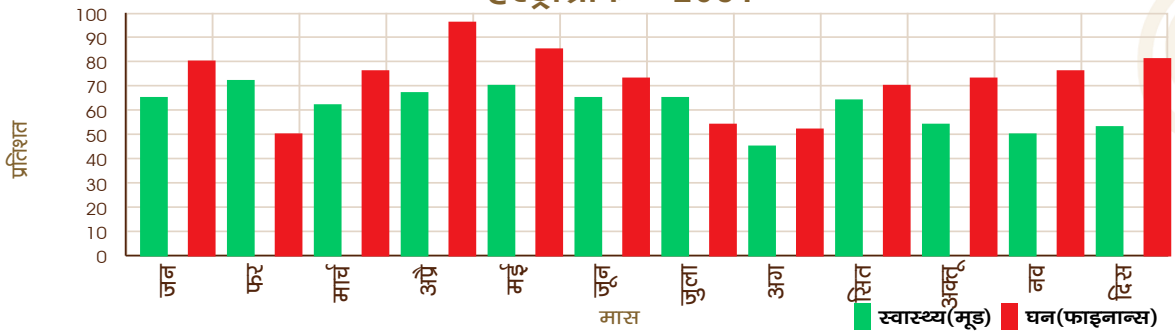

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2031

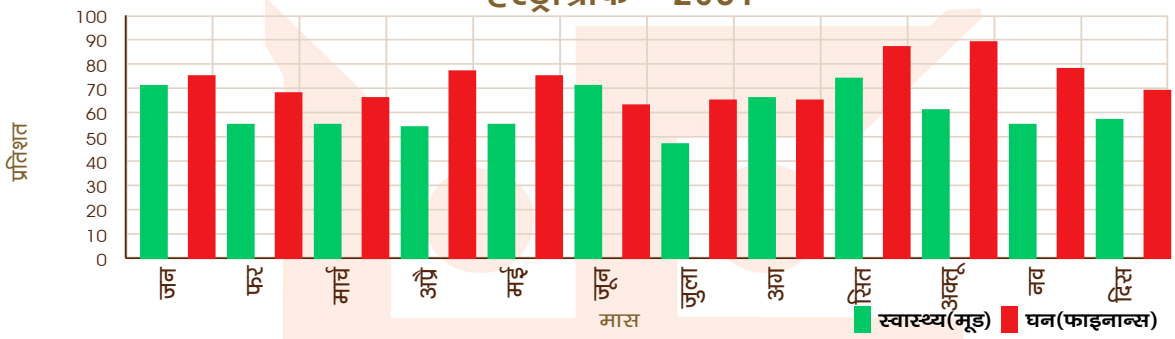

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2032

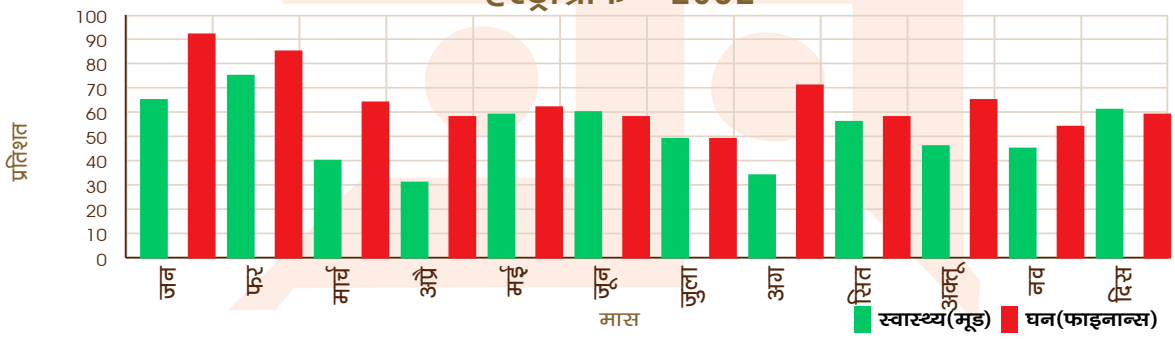

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2032

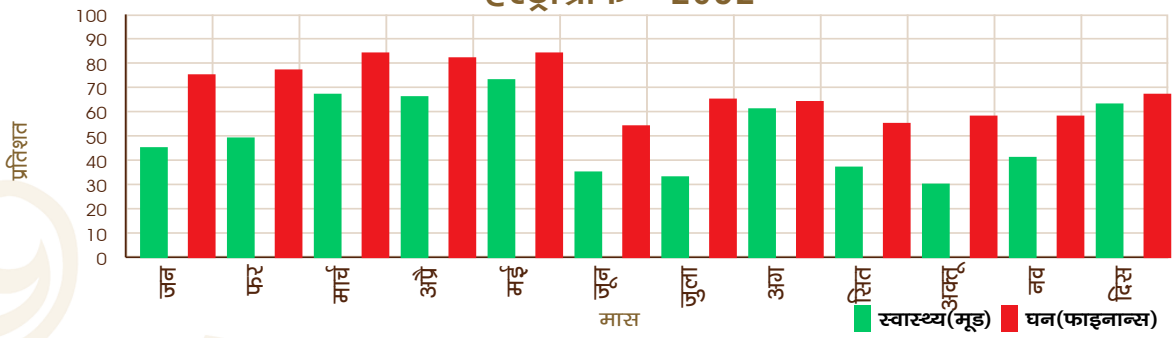

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2033

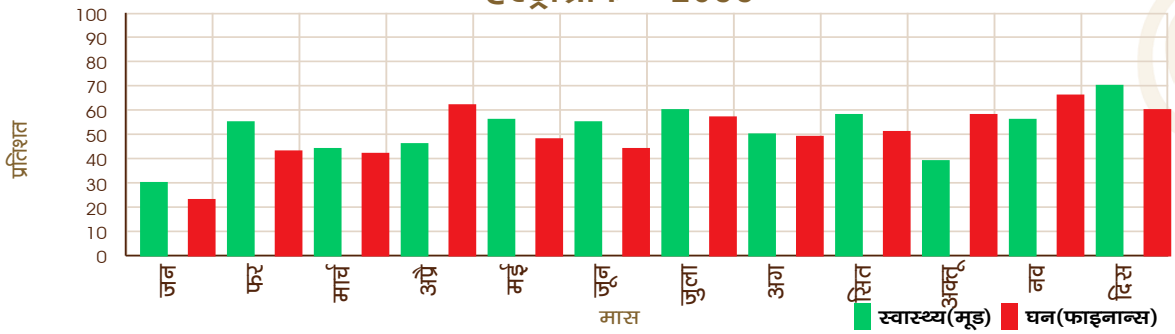

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2033

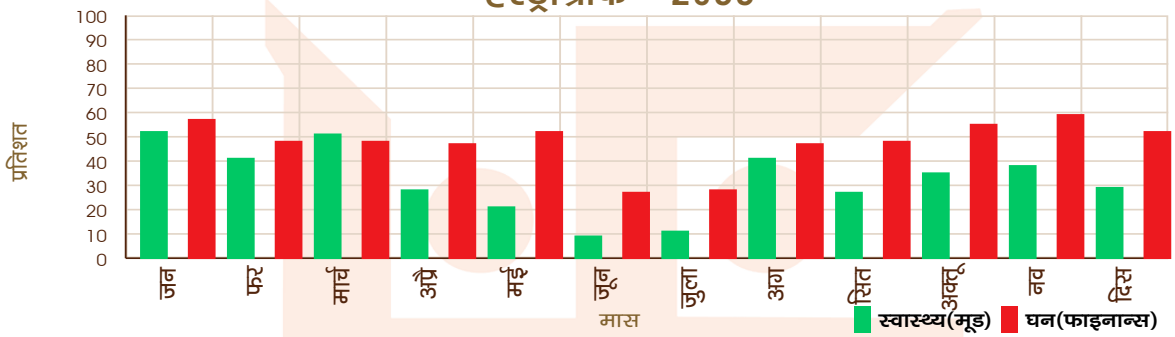

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2034

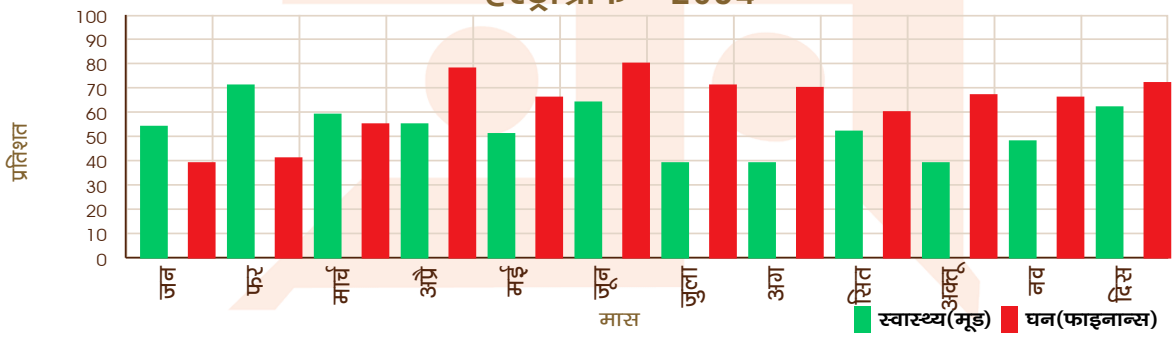

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2034

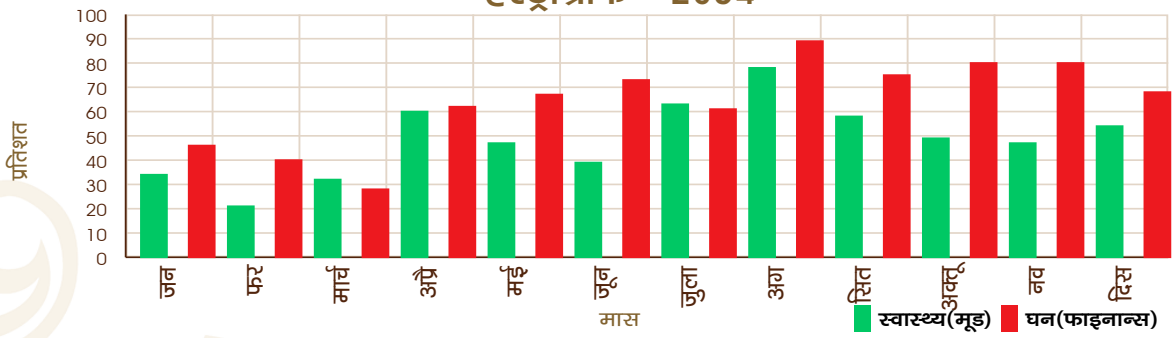

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2035

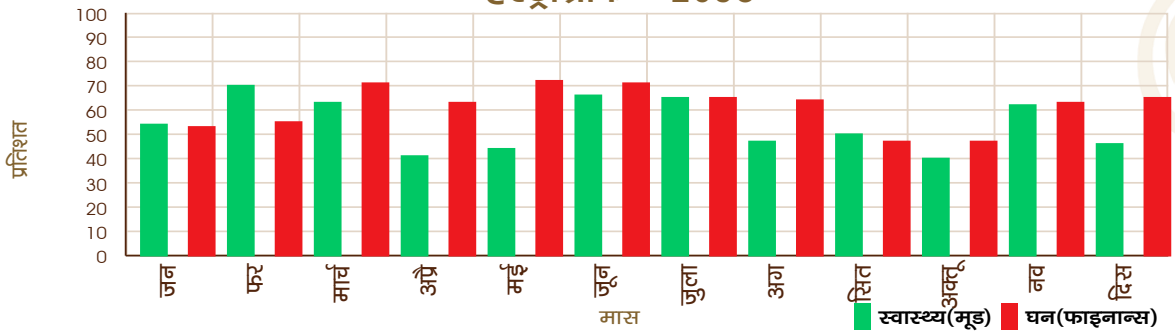

PRIYANKA

एस्ट्रोग्राफ – 2035

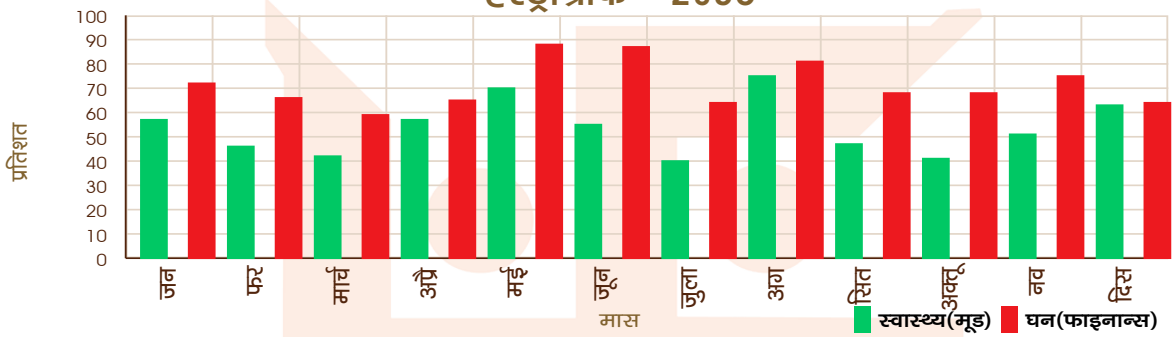

JITENDER SINGH

एस्ट्रोग्राफ – 2036

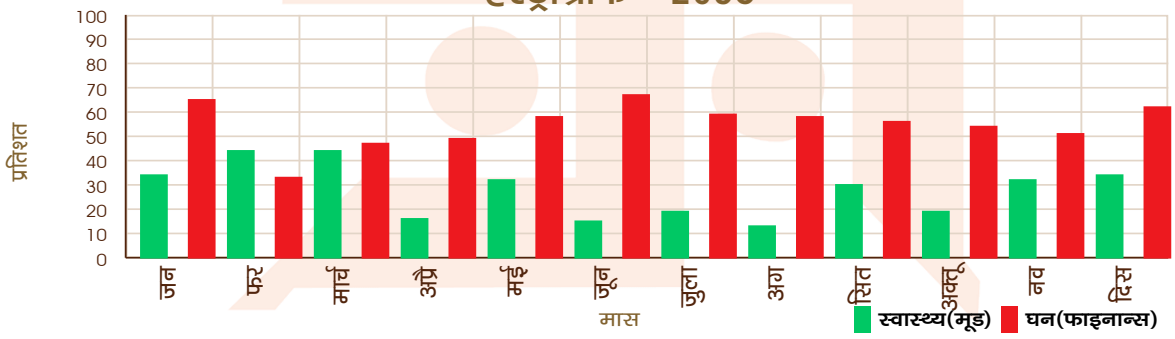

PRIYANKA
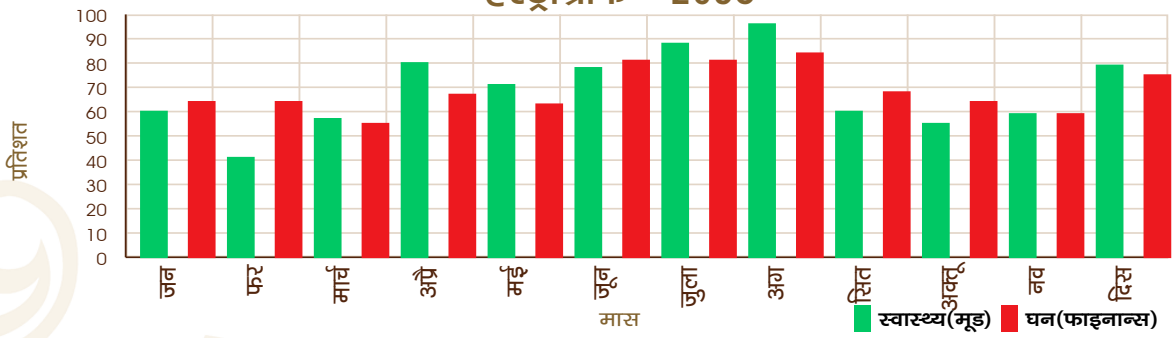
एस्ट्रोग्राफ – 2036